ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : कोरोना को हराना है...	2
2.	राम अवतार नहीं मानव थे	3
3.	सौम्य व्यक्तित्व एवं दिव्य कृतित्व...	4-5
4.	वैदिक संध्या की महिमा...	6
5.	कोरोना वायरस और आर्य समाज	7
6.	परमात्मा ने संसार सत्पुरुषों के सुख...	8-9
7.	कोरोना वाइरस और मानवजाति...	10
8.	महापुरुषों को नमन	12-13
9.	महात्मा हंसराज : एक आदर्श आचार्य	14-15
10.	निर्भया कांड के दोषी...	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : गर्दन और पीठ दर्द से...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय
आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

कोरोना को हराना है भारत को बचाना है

विश्व स्वास्थ्य संगठन कह रहा है कि कोरोना का कोई इलाज नहीं है, केवल मनुष्य की प्रतिरक्षा शक्ति ही कोरोना जैसे विषाणुओं से मनुष्य को बचा सकती है। बचाव ही एक मात्र उपाय है, कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं। आयुर्वेद में ऐसी बहुत सी औषधियां है जिनसे प्रतिरक्षा शक्ति को बहुत मजबूत किया जा सकता है। तुलसी, गिलोय, नीम, लौंग, इलायची, हल्दी, अदरक, अजवाइन, पुनर्नवा, शहद, हरसिंगार, जायफल, गाय का घी इत्यादि औषधियां शरीर में ऊर्जा उत्पन्न करती है जिससे प्रतिरक्षा शक्ति बहुत बढ़ जाती है। यज्ञ की अग्नि में ये पदार्थ डालने से सभी पदार्थ सूक्ष्म परमाणुओं में विभक्त होकर वायु में फैल जाता है जिससे वायु में उपस्थित सभी विषाणु नष्ट हो जाते हैं। प्रतिदिन घर-घर यज्ञ हो तो ऐसे विषाणु पैदा ही न हो। शहद को छोड़कर बाकी सभी सामग्रियों को कूटकर काढ़ा बनाकर प्रतिदिन पीने से शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति मजबूत होती है। मांस न खाएं, बासी भोजन न करें, बाहर का कुछ न खाएं, शराब और नशे से दूर रहें, किसी से हाथ बिलकुल न मिलाएं। अभिवादन के लिए केवल नमस्ते का ही प्रयोग करें। ऐसे फल खाएं जिनमें विटामिन सी बहुत अधिक मात्रा में हो। किसी भी फल और सब्जी को प्रयोग में लाने से पहले उसे सेंधा नमक के पानी में कम से कम दो घंटे पड़े रहने दें उसके बाद धोकर प्रयोग करें। यही पानी पीने के प्रयोग में लें। हर दो-तीन घंटे बाद हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोने की आदत डालें। चीन में हुई शोध के अनुसार 'ओ ब्लड ग्रुप' वालों से यह कोरोना वायरस डरता है।

यह जरूरी नहीं कि जीवन में हमेशा प्रिय क्षण ही आए, दूसरे लोगों का अनुकूल व्यवहार ही हमें प्राप्त हो। अपमान, शोक, वियोग, हानि, असफलता आदि तमाम स्थितियां आती रहती हैं और जाती भी रहती हैं। दुनिया का कोई भी शरीरधारी जीवन इन विधिधताओं से बच नहीं पाता है। जरा सी बात पर परेशान हो जाना, निराश हो जाना, रोना, उत्तेजित हो जाना, क्रोधांध स्थिति में आकर न कहने योग्य को कह जाना और न करने योग्य को कर जाना, यह सब मनुष्य की आंतरिक कमजोरी, दुर्बलता, जड़ता के लक्षण हैं। हमें अपने मानसिक बल को बढ़ाने की आवश्यकता है। कठिन से कठिन स्थिति में भी विवेकपूर्वक और धैर्यपूर्वक निर्णय लेना है। उत्तेजना और क्रोध में कहा गया शब्द और किया गया कर्म स्थिति को बिगाड़ देता है। इसलिए मौन और मुस्कुराहट को अपना आभूषण बनाएं।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

आज से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व हिंदू, मुस्लिम, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई, पारसी, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर आदि शब्दों का नामोनिशान न था। परमात्मा की पूजा की एक ही विधि थी यज्ञ और योग। एक ही धर्म पुस्तक थी वेद। एक ही शिक्षा पद्धति थी गुरुकुल। लगभग तीन हजार वर्ष पश्चात पुनः ऐसा हो जाने की संभावना है। आर्य समाज इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है। इस समय देश-विदेश में इसके द्वारा कई हजार संस्थाएं हैं-स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल व शिविर संचालित है। जब तक भिन्न-भिन्न मत-मतांतरों का विरुद्धावास छूटकर पुनः एक वेद मत की स्थापना नहीं हो जाती तब तक विश्व में परस्पर प्रेम, एकता व शांति की स्थापना नहीं हो सकती। जैसे हर कंपनी अपने उत्पाद के साथ एक दिशा निर्देशिका देती है, उसी प्रकार परमात्मा सृष्टि उत्पत्ति के साथ एक मैनुअल देता है, जिसका नाम है वेद। वेद को जानना मानना व उसका प्रचार-प्रसार करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है।

राम अवतार नहीं मानव थे

मानवता का उदय होना कालचक्र की सहज गति है। बाल्मीकि रामायण में मानवता के चरम रूप में राम को आदर्श स्वीकार किया गया है, ईश्वर के अवतार के रूप में नहीं। रामायण में अनेकों जगह ऐसे प्रसंग आये हैं जहां राम को ईश्वर न सिद्ध करके महा मानव और पुरुषोत्तम ही वर्णित किया गया है। श्रीराम ने स्वयं भी अपने को मनुष्य स्वीकार किया है। 'आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्' युद्ध कांड 117 सर्ग) में राम अपने को मनुष्य ही मानते हैं और अपने को राजा दशरथ का पुत्र कहते हैं। सीता अपहरण होने पर श्रीराम व्यथित होकर कहते हैं- **पूर्वं मया नूनममीप्सितानि पापानि कर्माण्यसत्कृतानि।**

(अरण्य का. 63 सर्ग)

मैंने पूर्व जन्म में बार-बार ऐसे दुष्कर्म किये थे जो मुझे निरंतर दुख भोगने पड़ रहे हैं। राज्य से तथा अपने पारिवारिकजनों से वियोग होना, पिताश्री का देहावसान तथा सीता से वियोग होना, क्या यह दुखों की पराकाष्ठा से अग्नि की भांति प्रदीप्त होना नहीं है। राम-रावण युद्ध में जब इंद्रजीत के बाणों से लक्ष्मण घायल हो जाते हैं तो उसे देख, अत्यंत दुखाकुल हो, राम कहते हैं- **किं मया दुष्कृतं कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि। येन मे धार्मिको भ्राताः निहतश्चाग्रतः स्थितः।।** (युद्ध का. 63 सर्ग)

मेरे से पूर्व जन्म में ऐसा कोई दुष्कर्म हो गया है जिसका फल यह है कि मैं अपने धार्मिक भाई को मृतप्राय देख रहा हूं। रावण वध के अनंतर राम अपने आपको मनुष्य मानते हुए सीता से कहते हैं- **यत्कर्तव्यं मनुष्येन धर्षणा परिमार्जता। तत्कृतं सकलं सीते शत्रुहस्तादमर्षणात्।।**

हे सीते! मैं मनुष्य होता हुआ जो कुछ कर सकता था वह मैंने किया और यह अच्छा ही रहा कि शत्रुओं के साथ से कभी हर्षित नहीं हो सका। बाल्मीकि रामायण में अनेक प्रसंगों में राम को अवतार न मानकर मानव ही वर्णित किया गया है। अंध-श्रद्धा से दुराग्रही वृत्ति वाले लोगों ने अनहोनी कल्पनाओं, देवी प्रसंगों, अवतारों, प्रक्षेपों और चमत्कारों से राम एवं कृष्ण के रूप को विकृत एवं अविश्वसनीय बना दिया है। आज के वैज्ञानिक मशीनीयुग में अनेक स्पष्टीकरण देने के बाद उसको ऐतिहासिकता और उपादेयता को स्वीकार करने के लिए संदिग्ध दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। अनेक काल्पनिक और मनगढ़ंत प्रसंगों को प्रक्षिप्त करके रामायण और महाभारत जैसे अद्‌भुत शिक्षाप्रद महाकाव्यों को कथानकों को काल्पनिक कहने की खुली छूट दे दी गई है।

राम और कृष्ण को मर्यादा-पुरुषोत्तम, महापुरुष, आदर्श राजा के स्थान पर भगवान के अवतार के रूप में प्रस्थापित करके उन्हें मानव समाज से लगभग काट सा दिया है। यदि बाल्मीकि और व्यास वर्णित राम और कृष्ण के उच्च पुरुष और महान मानव के रूप को ही महत्व दिया जाता तो देश का अधिक कल्याण हो सकता था। लोगों ने उन्हें ईश्वर मानकर मनुष्यता की गरिमा को मटियामेट कर दिया है। अपने में हीन भावना मानकर कुछ लोग कहने लगे कि राम और कृष्ण तो ईश्वर थे, वे तो सब

कुछ कर सकते थे। उन्होंने जो कुछ दिया वह उनकी ईश्वरीय शक्ति से हुआ, हम तो वह नहीं कर सकते क्योंकि हम मनुष्य हैं। हमारी अल्पशक्ति है, मनुष्य और ईश्वर का क्या मुकाबला।

सामाजिक धरातल पर संघर्ष और दायित्व निर्वाह की क्षमता मानव के रूप में न होकर अवतार के रूप में अधिक महत्व की नहीं है। मानव का सबसे बड़ा चारित्रिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप राम के जीवन में निहित है, जो परिपूर्ण होने के बावजूद प्रयोगात्मक ढंग से खरा उतरता है।

श्रीराम का आदर्श विसंगतियों से मुक्त होकर सहज आदर्श की ओर बढ़ता हुआ कदम है। आज का युग घर के बिखराब की समस्या से संत्रस्त है। कौटुम्बिक टूटन के संकट के कारण भाई-भाई, पिता-पुत्र के संबंध और आदर्श परिवार की शिक्षा राम के समूचे जीवन और व्यवहार से मिलती है। राम के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर पारिवारिक टूटन को बचाया जा सकता है। शबरी के बेर स्वीकार करने वाले, केवट को गले लगाने वाले, परि-त्यक्त जंगली वानर जाति के लोगों को सखा बनाकर भाइयों के समान आदर और स्नेह देने वाले राम से बढ़कर कोई अन्य महापुरुष दिखाई नहीं देता।

सौम्य व्यक्तित्व एवं दिव्य कृतित्व के धनी महात्मा हंसराज

प्रो. ओम कुमार आर्य

आर्य समाज का सौभाग्य था कि महर्षि के निर्वाणोपरांत विभिन्न क्षेत्रों में हमारे उन दिग्गज नेताओं ने मोर्चा सम्हाला जो पूरी तरह से सुयोग्य थे, कर्मठ थे, सिद्धांत निष्ठ और समर्पित थे। उनमें कतिपय उल्लेखनीय नाम है–अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, वैदिक धर्म के लिए अपना जीवन न्यौछावर करने वाले धर्मवीर, पं. लेखराम आर्य मुसाफिर, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, उद्‌भट वैदिक विद्वान मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, सर्व त्यागी महात्मा हंसराज आदि। इस लेख के चरित नायक महात्मा हंसराज की 155वीं जयंती पर उनके शुभ, शुचि दुग्ध-धवल चरित्र के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है। यह तो सत्य है कि महात्मा जी का जीवन गुणों और विशेषताओं का एक भव्य महाकाव्य ही नहीं विशाल महासागर है, इस लघु लेख में उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व को पूरी तरह से तो प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, हां एक सक्षिप्त सी झलक अवश्य दिखाई जा सकती है। महात्मा जी अपने सौम्य व्यक्तित्व और दिव्य कृतित्व के कारण उन महापुरुषों में शामिल है जिनके विषय में नीतिकार महाराज भर्तृहरि कहते हैं– 'नास्ति येषां यश: कार्य जरामरणजं भयम्।' नीति शतक श्लोक–23।

आइये, उनके शालीन, सौम्य देवोपम व्यक्तित्व और असाधारण कृतित्व के कुछ पहलुओं पर विचार करे। किसी व्यक्ति के जीवन में, या यूं कहिये कि उसके व्यक्तित्व में जिन गुणों से सौम्यता, शालीनता, गांभीर्य आदि की झलक देखने को मिलती है उनका उल्लेख महर्षि दयानन्द ने अपनी कालजयी कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' के तीसरे समुल्लास के प्रारम्भ में किया है– 1. अध्ययन/स्वाध्यायादि में रत रहना 2. शील स्वभाव युक्त होना 3. सत्य निष्ठ होना 4. गर्व न करना/अभिमान–मल से रहित होना 5. संसार के कष्ट दूर करने में तत्पर रहना 6. परोपकार में तत्पर रहना।

ये सारे गुण महत्मा जी में थे और उनके व्यक्तित्व में स्पष्ट झलकते थे। निरभिमानता के तो वे साकार रूप थे। शायद महात्मा विदुर का यह कथन सदैव उनके समझ होगा– 'अभिमान: श्रियं हन्ति' अर्थात अभिमान से श्री/शोभा का हनन होता है। महात्मा हंसराज पूर्णत: आस्तिक थे, ईश्वर में उनकी आस्था अटल, अविचल थी। स्वाभाविक है कि सच्चे ईश्वर भक्त को ईश्वर की कृपा तो मिलती ही है। और महाराज भर्तुहरि ने अपने 'नीतिशतकम्' के श्लोक 24 में जो नौ उत्तम गुण एक आस्तिक व्यक्ति के गिनाये है उनमें से तीन ये है– क्लेश रहित शांत मन, अजब सुकून देने वाला आकर्षक, आभायुक्त व्यक्तित्व, विद्या से निर्मलीकृत मुखमंडल जो महात्मा हंसराज जी की मुखाकृति पर सदैव अकित रहते थे। सौम्यता, शालीनता महात्मा जी के लिए दिखावे के लिए ओढ़े हुए भाव न होकर उनके स्थायी भाव थे।

हम चाहकर भी अपने व्यक्तित्व और जीवन में वे विशेषताये उत्पन्न नहीं कर पाये जो एक सच्चे वैदिक–धर्मी के जीवन में होनी चाहिए। अंतर यह है कि हम 'कथनी' बहादुर है महात्मा जी

महात्मा हंसराज पूर्णतः आस्तिक थे, ईश्वर में उनकी आस्था अटल, अविचल थी। स्वाभाविक है कि सच्चे ईश्वर भक्त को ईश्वर की कृपा तो मिलती ही है। और महाराज भर्तुहरि ने अपने 'नीतिशतकम्' के श्लोक 24 में जो नौ उत्तम गुण एक आस्तिक व्यक्ति के गिनाये है उनमें से तीन ये है- क्लेश रहित शांत मन, अजब सुकून देने वाला आकर्षक, आभायुक्त व्यक्तित्व, विद्या से निर्मलीकृत मुखमंडल जो महात्मा हंसराज जी की मुखाकृति पर सदैव अकित रहते थे। सौम्यता, शालीनता महात्मा जी के लिए दिखावे के लिए ओढ़े हुए भाव न होकर उनके स्थायी भाव थे। हम चाहकर भी अपने व्यक्तित्व और जीवन में वे विशेषताये उत्पन्न नहीं कर पाये जो एक सच्चे वैदिक-धर्मी के जीवन में होनी चाहिए। अंतर यह है कि हम 'कथनी' बहादुर है महात्मा जी 'करणी' बहादुर थे। सिद्धांतो को, नियमो को, वेदोपदेश को साक्षात् आचरण में उतारना उनकी विशेषता थी, 'तोता रटंत' व्यर्थ का आलाप-प्रलाप करना हमारी आदत बन गई है। फलस्वरूप कही कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व इसलिए विलक्षण और असाधारण था कि व्यर्थ की चमक-दमक और एषणाओं की दलदल में न फंसकर उन्होंने सदा सरल, सहज और उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त पारदर्शी, दुग्ध-धवल चरित्र के धनी आदर्श मानव के रूप में जीवन यापन किया।

'करणी' बहादुर थे। सिद्धांतों को, नियमों को, वेदोपदेश को साक्षात् आचरण में उतारना उनकी विशेषता थी, 'तोता रटंत' व्यर्थ का आलाप-प्रलाप करना हमारी आदत बन गई है। फलस्वरूप कहीं कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व इसलिए विलक्षण और असाधारण था कि व्यर्थ की चमक-दमक और एषणाओं की दलदल में न फंसकर उन्होंने सदा सरल, सहज और उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त पारदर्शी, दुग्ध-धवल चरित्र के धनी आदर्श मानव के रूप में जीवन यापन किया।

बिना नागा सत्संग, संध्या, स्वाध्याय करना समय की अत्यधिक पाबंदी, अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहण, उच्च नैतिकता, मूक सेवा, देशभक्ति, शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सुख सुविधाओं की नि:स्वार्थ आहुति दे देना आदि अवयवों से निर्मित बुनियाद पर महात्मा जी का सौम्य व्यक्तित्व एवं दिव्य कृतित्व टिका हुआ है। त्याग, बलिदान, समर्पण आदि उनके जीवन का मूलमंत्र ही नहीं सार कहा जा सकता है। मात्र 22 वर्ष की आयु में एक युवक जो उच्च शिक्षा प्राप्त है, सक्षम है, अपने लिए अपने परिवार के लिए बहुत कुछ करने की अपार संभावनाएं जिसके सामने है वह अपने ऋषि के लिए, आर्य समाज के लिए बेहिचक पूरी दृणता से यह घोषणा कर दे कि मैं अपने प्रिय डीएवी के लिए (पहले विद्यालय पश्चात् महाविद्यालय) 'अवैतनिक' सेवाएं देने हेतु अपने को प्रस्तुत करता हूं, सोचिये कि त्याग तपस्या, समर्पण की और कितनी ऐसी मिसाले इतिहास में मिलती है। उनकी यह घोषणा 'भीष्म-प्रतिज्ञा' से कम नहीं है। मध्य युग में वैदिक-धर्म के पुनरुद्धार के लिए कटिबद्ध होकर महान वैदिक विद्वान कुमारिल भट्ट ने विलाप करती रानी मां को आश्वस्त किया था- 'मां विषीद क्रारोहे, भट्टोऽस्मि भूतले' कुछ इसी प्रकार का वचन युवक हंसराज ने सन् 1886 में मां आर्य समाज को दिया था कि चिंता करने की आवश्यकता नहीं अपनी प्रिय डीएवी संस्था की नींव की प्रथम ईंट मैं बनूंगा, और कहा था- 'हंसराजोऽस्मि भूतले' मैं हूं न, तुम्हारा अवैतनिक सेवक हंसराज।

अपने मिशन के लिए साक्षात् कृति की बलिवेदी पर इतनी बड़ी आहुति शायद ही कोई और मिले। हम देश के लिए बलिदान होने वाले अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक, चन्द्रशेखर आज़ाद, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह आदि बलिदानी वीरों की शहादत को नमन करते हैं, किन्तु यह कहना भी कोई अतिसयोक्ति नहीं कि महात्मा हंसराज ने भी जीवन की समस्त सुख-सुविधाओं को ठुकराकर, अपने रंगीन-कोमल सपनों का निर्ममता से गला घोंटकर एक शहीद का जीवन जीया और वे 'जिंदा शहीद थे' उनके नि:स्वार्थ सेवा-कार्य के लिए यह कहना सर्वधा उपयुक्त है कि-डी.ए.वी. के रूप में जब एक शिक्षा-

'दीप जलाना था, अज्ञान, अविद्या, अंधकार को धरा से दूर भगाना था। जीवनदानी कौन बनेगा, सोच रहा था आर्य समाज तप की भट्ठी में कौन तपेगा, चिंतित था आर्य समाज तब हंसराज आगे आया, मैं दायिव निभाऊंगा, अवैतनिक सेवा करूंगा और ऋषि का ऋण चुकाऊंगा, इसीलिए तो दिग्दिगन्त में गूंज रही है यह आवाज, धन्य महात्मा हंसराज, तुम धन्य महात्मा हंसराज।'

उनका व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी था। 25 साल की अवैतनिक सेवा के पश्चात् महात्मा जी 1912 में एक निष्काम कर्मयोगी, विरक्त अनासक्त योगी की तरह प्राचार्य पद से पृथक् हो गये किन्तु विभिन्न क्षेत्रों में सतत् सेवा कार्य करते रहे। उनका सेवा कार्य बहुत व्यापक था, जैसे शिक्षा का प्रसार, लोक-जागृति, विविध जनहित के कार्य, भूकंप, बाढ़, अकाल पीडितों की सहायता। कुछ उदाहरण-1921-22 में केरल में मालाबार और 1932 में जम्मू-कश्मीर के पूंछ में दंगा पीडितों की सहायता। दुर्भिक्ष के दौरान सन् 1918 में गढ़वाल, 1920 में उड़ीसा, शिमला, कांगड़ा में सन् 1921 में राहत कार्य। 1908 में आंध प्रदेश में भीषण दुर्भिक्ष पड़ा, महात्मा जी के दिन रात के अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप लगभग 19-17 हजार अकाल पीड़ितों को बचाया गया। इसी प्रकार भूकंप, बाढ़ जैसी भयंकर प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भी महात्मा हंसराज की अगुवाई में पीड़ितों को बचाया गया।

मैं पुन: अपने मूल विषय पर लौटता हूं कि महात्मा हंसराज जैसे युग पुरुष किसी भी संस्था की शान होते हैं, अनमोल निधि होते हैं, लंबी प्रतीक्षा के पश्चात् ऐसी विभूतियां धराधाम पर अवतरित होती हैं- हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पर रोती है, बनी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा। ऐसे महापुरुषों की जयंती के अवसर पर मात्र भाषणों, इधर-उधर से जुटायी सामग्री के आधार पर लिखे लेख, सेमिनार गोष्ठी आदि से कुछ विशेष हित नहीं होगा न डीएवी का, न आर्य समाज का, न समाज और न देश का। आवश्यकता है सोच में आमूल-चूल परिवर्तन की। अब जरूरत है महात्मा जी का ईमानदारी से अनुकरण करने की अपने जीवन यह सब लिखना संभव नहीं है। ○○

वैदिक संध्या की महिमा

संतोष नंदवानी
मयूर विहार, फेस-1, दिल्ली

हमारे संस्कृत साहित्य वाङ्मय में गायत्री की महिमा अत्यधिक है। वेदों में भी इस मंत्र को प्रथम स्थान प्राप्त है। इसके जाप करने से आत्मा पवित्र होकर यजमान को दीर्घायु, प्राण, प्रजा, कीर्ति, पशु, धन सम्पति से सम्पूर्ण कर देती है। इस मंत्र का जाप करते समय कुछ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस मंत्र का जाप मन में ही करना चाहिए। मीरासी अथवा आटो की तरह शोर मचाकर नहीं। इस मंत्र का बार-बार अभ्यास करने से आप ईश्वर के समस्त गुण आपकी अर्न्तरात्मा में अनुभव करने लगेंगे।

हम सब आर्य बहन, भाई प्रातः सायंकाल संध्या उपासना करते हैं। इसके कुल ग्यारह सोपान हैं, ताकि हम संध्या के मंत्रों का उच्चारण एवं इसके अर्थों को भली-भांति जान सकें एवं पूर्ण आनंद प्राप्त कर सकें।

संध्या का अर्थ- सम्+ध्या= ईश्वर का भली भांति ध्यान करना, अर्थात् समीप बैठकर ईश्वर का धन्यवाद, प्रार्धना एवं स्तुति करना। महर्षि दयानन्द ने मनुष्य का इस योनि में अनेक उद्देश्य ही यही बताया है कि अपने कर्तव्य की पूर्ति करना। वास्तव में मानव के कर्त्तव्य पूर्ति हेतु तीन मुख्य बातें बताई गई हैं- 1. अपने साथ क्या-क्या करना है अर्थात् अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अपने समस्त कर्त्तव्यों को निभाना।

2. दूसरों के साथ-साथ क्या-क्या करना है- दूसरों का उपकार करते हुए सद्व्यवहार पूर्वक जीवन व्यतीत करना। 3. ईश्वर के प्रति हमारे क्या-क्या कर्त्तव्य हैं- किसी की निंदा चुगली न करना अपितु ईश्वर के प्रति धन्यवाद करना। इन तीनों का समावेश वैदिक संध्या में समाहित है। हमारे संस्कृत साहित्य वाङ्मय में गायत्री की महिमा अत्यधिक है। वेदों में भी इस मंत्र को प्रथम स्थान प्राप्त है। इसके जाप करने से आत्मा पवित्र होकर यजमान को दीर्घायु, प्राण, प्रजा, कीर्ति, पशु, धन सम्पत्ति से सम्पूर्ण कर देती है। इस मंत्र का जाप करते समय कुछ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस मंत्र का जाप मन में ही करना चाहिए। मीरासी अथवा आटो की तरह शोर मचाकर नहीं। इस मंत्र का बार-बार अभ्यास करने से आप ईश्वर के समस्त गुण आपकी अर्न्तरात्मा में अनुभव करने लगेंगे क्योंकि कहा गया है- 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' गायत्री मंत्र संध्या का प्रथम सोपान है। इस मंत्र के तीन भाग है-

1. तत्सवितुर्वरेण्यम्- सृष्टि की आदि शक्ति 'सविता' है (स्तुति भाग) गायत्री मंत्र का देवता भी सविता ही है।

2. भर्गो देवस्य धीमहि- दुःख हर्ता, दिव्य गुणों से युक्त (उपासना भाग) धारण करते है, ध्यान करते हैं।

3. धियो यो नः प्रचोदयात्- हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर (प्रार्थना भागा) प्रेरित करें।

ओ३म् परमात्मा का निज नाम है। यह दिव्य शब्द तीन गुण सूत्र 'अकार, उकार एवं मकार' से सुशोभित है व्याख्या विशेष- अकार, विराट, अग्नि, विश्वादि। 1. विराट्- सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाले, 2. अग्नि- ज्ञान स्वरूप शुद्ध-बुद्ध परमात्मा, 3. विश्वादि- सर्वत्र व्यापक, कण-कण में व्याप्त। उकार- हिरण्यगर्भ, वायु, तेजस- 1. ज्योति, अमृत, कीर्ति, सूर्यादि 2. अनन्त बल, 3. प्रकाश स्वरूप, आनंद स्वरूप, आनन्द स्वरूप, तेजरूप आदि। मकार- ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञः आदि। 1. सष्टिकर्ता, न्यायकारी 2. अजर, अमर, 3. ज्ञानस्वरूप, अनन्त आदि। भू, भुवः स्वः- आरम्भ में ये तीनों व्याहृतियां है।

जिस प्रकार ओ३म् से सत्, चित् आनंद का वर्णन करते हैं। व्याहृति का अर्थ- विशेष रूप से आहृति अर्थात् सर्व विराट का बौध प्रकाश कराने वाली। परमात्मा का विराट् रूप तीनों लोकों में दृष्टिगोचर होता है। इससे उसकी अद्भुत महिमा प्रकट होती है।

संध्या का समय संधि वेला अर्थात्- प्रकाश और तम का मिलन होता है। इसीलिए संध्या का उद्देश्य ही यही है- मनुष्य के अज्ञान को दूर करके ज्ञान की ओर प्रेरित करना।

जिस प्रकार भोजन का पूर्णानन्द लेने के लिए भोजन के स्वाद, रूप रंग के प्रति पूर्णतः समर्पण होने की आवश्यकता है। उसी प्रकार आत्मा को भी भजन का आनंद लेने के लिए पूर्णतया एकाग्रचित होना आवश्यक है।

संध्या को 'यज्ञ' भी कहा है-जिस प्रकार यज्ञ में यजमान पत्नी के साथ बैठता है उसी प्रकार इस ब्रह्म यज्ञ (संध्या) में 'बुद्धि' जो कि आत्मा की पत्नी मानी जाती है, ऐसे समय में साधक बड़े शुद्ध भाव से परमात्मा से जुड़ जाता है। यदि प्रतिदिन संध्या आदि जप किया जाए तो प्रायश्चित

की आवश्यकता ही नहीं रहती। यह मन की चंचलता को भी काफी हद तक वश में करने में सहायता करती है। आज के कलियुग में तो गायत्री उपासना (जाप) करने से ही सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण हो सकती है। यह तो भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को, गांधी व टैगोर को भी यह बताा था। कुछ लोग तर्क करते हैं कि बार-बार जाप करना और एक ही बात कहने से क्या लाभ?

इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाएगा-मलेरिया होने पर क्या एक बार ही कुनीन की गोली लेना पर्याप्त है? कुनीन की आवश्यकता तब तक रहेगी जब तक मलेरिया के कीटाणु पूरी तरह समाप्त न हो जाएं। उसी प्रकार आत्मा के ऊपर जमी हुई पापों की मैल की परत जब तक हट नहीं जाती, विषम वासनाएं समाप्त नहीं हो जाती, घूंघट के पट खुल नहीं जाते, तब तक बार-बार जाप करना ही पड़ेगा।

ऐसे ही लोहे को अग्नि में डालने पर बार-बार तपाना पड़ता है क्योंकि न जाने वह कब लाल हो जाए, उसी प्रकार परमात्मा के गुणों को बार-बार स्मरण करना होगा, न जाने कब आत्मा परमात्मा का सानिध्य प्राप्त कर ले। एक अन्य उदाहरण इसकी और भी पुष्टि करता है। जैसे शीत में ठिठुरता हुआ मनुष्य आग के सन्निकट होने पर सर्दी से बचाव का अनुभव करने लगता है। उसी प्रकार यज्ञ करने से, संध्या करने से ईश्वर के सानिध्य में समस्त मैल और दु:ख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार जीवात्मा पवित्र शुद्ध-बुद्ध हो जाती है। उसका आत्मबल अत्यधिक बढ़ जाता है और कठिन से कठिन समस्या आने पर भी मनुष्य घबराता नहीं। उसकी सहनशक्ति में वृद्धि हो जाती है। स्वामी महर्षि दयानन्द के अनुसार-

उनका कथन है कि गायत्री सद्बुद्धि का मंत्र है और परमात्मा से मांगने योग्य वस्तु सद्बुद्धि ही है। इसी के द्वारा मनुष्य को सन्मार्ग एवं सत्कर्म करने की प्रेरणा मिलती है जिससे समस्त सुखों की प्राप्ति होती है। अत: संध्या ही वास्तव में मनुष्य को इस संसार में आने के मुख्य उद्देश्य को पूर्ण करने की दिशा प्रदान करती है। आइए हम सब इस दिशा की ओर शीघ्रत: से अग्रसर होवें एवं अपने जीवन को सफल बनाएं। **ओ३म् शान्ति!!**

कोरोना वायरस और आर्य समाज

कोरोना वायरस से डर कर भले ही आज हर कोई नमस्ते कर रहा हो पर आर्य समाज के महान विद्वान पंडित गंगा प्रसाद जी ने तो आज से लगभग सौ वर्ष पहले ही बता दिया था की वैदिक अभिवादन नमस्ते ही सर्वोत्तम अभिवादन है। बात आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व की है। कलकत्ता में एक सर्वधर्म सम्मेलन हो रहा था, सम्मेलन में एक प्रश्न किया गया की कौन सा अभिवादन का तरीक़ा उत्तम है और क्यों? इस प्रश्न का उत्तर सभी धर्म गुरुयों ने दिया पर अंत में सर्वसम्मति से पंडित गंगा प्रसाद जी का उत्तर ही सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया, जिनका कहना था की नमस्ते अभिवादन ही सबसे उत्तम है। जब लोगों ने पूछा की नमस्ते का क्या भाव या अभिप्राय है तो उन्होंने बताया 'नमस्ते का अर्थ है मैं अपने मस्तिष्क की समस्त बुद्धिमत्ता के साथ, अपनी भुजाओं की समस्त शक्ति के साथ और अपने हृदय की समस्त उद्दात भावनाओं के साथ आपके समक्ष नत मस्तक होता हूं। (With all the wisdom of my mind , with all the power of my arms and with all the great feelings of my heart , I bow before you) तो अब आप भी प्रण लें कि आज से सबका अभिवादन नमस्ते से ही किया करेंगे।

कोरोना वायरस से संक्रमण के जोखिम को कम करने के लिए इन उपायों को अपनाएं : चीन में सर्वप्रथम फैला कोरोना वायरस एक नई बीमारी है, जिससे दूसरे देश भी प्रभावित हो चुके हैं। इस वायरस के फ्लू जैसे ही लक्षण हैं मसलन बुखार, कफ, सांस लेने में कठिनाई।

क्या करें : भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में जाने से बचें। फ्लू से संक्रमित व्यक्ति से एक हाथ तक की दूरी बनाए रखें। पर्याप्त नींद और आराम लें, पर्याप्त मात्रा में पानी/तरल पदार्थ पीएं और पोषक आहार खाएं। फ्लू से संक्रमण का संदेह हो तो चिकित्सक से सलाह अवश्य लें। लोगों से अगले 14 दिनों तक कम ही रखें संपर्क और एक अलग कमरे में सोएं। छींकते समय अपनी नाक और मुंह को ढंक लें। अपने हाथों को बार-बार साबुन से अच्छी तरह धोएं। कफ, कोल्ड और फीवर से पीड़ित व्यक्ति से दूरी बनाए रखें।

क्या न करें : गंदे हाथों से आंख, नाक अथवा मुंह को छूना। किसी से मिलने के दौरान गले लगना, चूमना या हाथ मिलाना। सार्वजनिक स्थानों पर थूकना। बिना चिकित्सक के परामर्श के दवाएं लेना। इस्तेमाल किए हुए नेपकिन, टीशू पेपर इत्यादि खुले में फेंकना। फ्लू वायरस से दूषित सतहों का स्पर्श (रेलिंग इत्यादि)। सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान करना।

परमात्मा ने संसार सत्पुरुषों के सुख व आत्म कल्याण के लिये बनाया है

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

हमारा यह संसार स्वत: नहीं बना और न ही यह पौरुषेय रचना है। इस संसार को मनुष्य अकेले व अनेक मिलकर भी नहीं बना सकते। हमारा यह सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, सौर मण्डल तथा ब्रह्माण्ड अपौरुषेय और ईश्वर से रचित हैं। प्रश्न किया जा सकता है कि परमात्मा ने यह संसार क्यों बनाया है? परमात्मा सच्चिदानन्दस्वरूप सत्ता होने से ज्ञान एवं कर्म करने वाली सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान सत्ता है। परमात्मा अनादि, नित्य, अविनाशी तथा अनंत है।

ईश्वर के अनादि होने से उसने इस सृष्टि को पहली बार नहीं रचा अपितु उसने ऐसी ही सृष्टि को इससे पूर्व भी अनंत बार रचा है। यह सृष्टि वह सृष्टि के उपादान कारण प्रकृति से बनाता है। सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति भी अनादि व नित्य होने सहित अविनाशी व अभाव को प्राप्त न होने वाली है। सच्चिदानन्द-स्वरूप ईश्वर, त्रिगुणात्मक सत्व, रज व तम गुणों वाली जड़ प्रकृति के अतिरिक्त संसार में चेतन जीवों की भी है।

जीव सत्य व चित्त, अत्यल्प परिमाण, एकदेशी, समीम, जन्म-मरण धर्म, कर्मफल के बंधनों में बंधा हुआ है। सभी अनादि, नित्य एवं अविनाशी हैं। परमात्मा अपनी प्रजा जीवों के लिये ही इस सृष्टि को बनाता व चलाता है। वह एक पल के लिये भी निद्रा को प्राप्त नहीं होता और न ही थकान दूर करने के लिये विश्राम करता है। शास्त्रों के अनुसार उसका एक दिन 4.32 अरब वर्षों का होता है। इस अवधि में वह सृष्टि को बनाता है और इसको चलाता है।

सृष्टि बनने के बाद जीवात्माओं को उनके पूर्व कल्प व जन्मों के अनुसार उपयुक्त व योग्य जन्म मिलता रहता है। यदि हमारे पाप व पुण्य बराबर होते हैं तो हमें मनुष्य का जन्म मिलता है। यदि हमारे पाप कर्म पुण्य से किंचित भी अधिक होते हैं तब हमें मनुष्य का जन्म न मिलकर पशु, पक्षी आदि नीच प्राणी योनियों में जन्म प्राप्त होता है। जन्म व मृत्यु की व्यवस्था हमारे कर्मानुसार परमात्मा करता है। हमारा अच्छा स्वास्थ्य व रोग भी हमारे ज्ञान पूर्वक कर्म व भोजन आदि पर निर्भर करते हैं।

ईश्वर ने इस सृष्टि को सभी अनंत जीवों के कल्याण वा सुख भोग के लिये बनाया है। हमारे शुभ व पुण्य कर्मों का फल सुख होता है और हमारे पाप व अशुभ कर्मों का फल दु:ख होता है। हमारे देश व विश्व में बहुत से मत ऐसे हैं जो ईश्वर के सत्यस्वरूप व उसके कर्म फल के विधान को नहीं जानते। इस अज्ञान के कारण वह ईश्वर की इच्छा व भावना के विरुद्ध अनैतिक, अशुभ व पाप कर्म करते हैं। वह मूक व हमारे लिये उपयोगी गाय, बकरी, भेड़, गधा, घोड़ा, मछली, मुर्गी-मुर्गा आदि प्राणियों को अनावश्यक व अनुचित रूप से शारीरिक कष्ट देते हैं। यहां तक की अपनी जीभ के स्वाद व पेट भरने के लिये पशुओं का वध तक कर डालते हैं। यह परमात्मा को न जानने और उसे भली प्रकार से न समझने के कारण से होता

मनुष्यों को मनुष्यता का ही व्यवहार करना चाहिये। इसी से उसकी समाज में शोभा होती है। दुष्ट प्रकृति के मनुष्यों को सुधारना आसान काम नहीं है। कुछ थोड़े से लोग अपने विचारों में परिवर्तन करते रहते हैं परंतु एक बहुत बड़ी जनसंख्या सात्विक विचारों से दूर होने के कारण रज व तमों गुणों से प्रभावित व्यवहारों को करती है और अपने जीवन को नरक के समान व्यतीत कर मृत्यु होने पर अधम कोटि की प्राणी योनियों में जन्म लेकर अनेक जन्मों तक दु:खों को भोगते हुए ईश्वर की करुणा व दया के कारण पुनः मनुष्य योनि में जन्म प्राप्त करती हैं। संसार में अनन्त संख्या में जीवात्मायें हैं। यह सभी जीवात्मायें स्वरूप व गुणों में समान हैं। सभी जन्म व मरणधर्म हैं जिसका आधार इनके पूर्वजन्म के कर्म हुआ करते हैं। परमात्मा सभी जीवों का माता-पिता, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। इसी कारण परमात्मा अपनी जीवरूप प्रजा के लिये इस सृष्टि को बनाकर उनको पूर्वजन्मों के अनुसार उनकी जाति, आयु और सुख व दु:ख रूपी भोग निर्धारित कर विभिन्न प्राणी योनियों में जन्म देता है। परमात्मा ऐसा जीवों के प्रति अपनी दया एवं करुणा के स्वभाव के कारण करता है।

है। परमात्मा ने इन पशु व पक्षियों को मनुष्यों के ही समान अपने पूर्वजन्म के कर्मों का भोग करने के लिये जन्म दिया है। हमें इन जीवात्माओं से युक्त सभी पशुओं को उनके जीवनयापन में सहयोग करना चाहिये। वैदिक धर्मी इस व्यवस्था को जानते हैं और परमात्मा की वेदनिहित आज्ञा के अनुसार कर्तव्यों का पालन करते हैं परंतु बहुत से लोग जो नाना मतों को मानते हैं वह ईश्वर की इच्छा व भावनाओं के विपरीत इनकी हत्या व इनके मांस का भक्षण करते हैं।

ऐसा करने से उनका स्वभाव हिंसा से युक्त होकर वह समाज में घृणा व क्रोध के वशीभूत होकर धर्म व कर्तव्य का पालन तथा सत्य धर्म वेद का आचरण करने वालों को भी पीड़ा व दुःख देते हैं। ऐसा अनुचित काम कोई भी मनुष्य करता है तो वह मनुष्य नहीं अपितु मनुष्य के विपरीत दुष्टाचारी ही कहा जा सकता है। मनुष्यों को मनुष्यता का ही व्यवहार करना चाहिये। इसी से उसकी समाज में शोभा होती है। दुष्ट प्रकृति के मनुष्यों को सुधारना आसान काम नहीं है। कुछ थोड़े से लोग अपने विचारों में परिवर्तन करते रहते हैं परंतु एक बहुत बड़ी जनसंख्या सात्विक विचारों से दूर होने के कारण रज व तमों गुणों से प्रभावित व्यवहारों को करती है और अपने जीवन को नरक के समान व्यतीत कर मृत्यु होने पर अधम कोटि की प्राणी योनियों में जन्म लेकर अनेक जन्मों तक दुःखों को भोगते हुए ईश्वर की करुणा व दया के कारण पुनः मनुष्य योनि में जन्म प्राप्त करती हैं।

संसार में अनन्त संख्या में जीवात्मायें हैं। यह सभी जीवात्मायें स्वरूप व गुणों में समान हैं। सभी जन्म व मरणधर्म हैं जिसका आधार इनके पूर्वजन्म के कर्म हुआ करते हैं। परमात्मा सभी जीवों का माता-पिता, आचार्य, राजा और न्यायधीश है। इसी कारण परमात्मा अपनी जीवरूप प्रजा के लिये इस सृष्टि को बनाकर उनको पूर्वजन्मों के अनुसार उनकी जाति, आयु और सुख व दुःख रूपी भोग निर्धारित कर विभिन्न प्राणी योनियों में जन्म देता है।

परमात्मा ऐसा जीवों के प्रति अपनी दया एवं करुणा के स्वभाव के कारण करता है। हमें भी परमात्मा के इस गुण को ग्रहण कर अपने परिवार व समाज के सभी लोगों के प्रति ऐसा ही सेवाभाव, आचरण व व्यवहार रखते हुए सहयोग एवं उनकी पीड़ाओं को दूर करने का कार्य करना चाहिये। ऐसे सत्कर्मों को करने से ही पुण्य अर्जित करते हैं जिनका परिणाम जन्म-जन्मान्तर में आत्मा की उन्नति के साथ मनुष्य व देव योनि में जन्म की प्राप्ति होती है। मनुष्य जन्म की प्राप्ति से मनुष्य के मोक्ष और जन्म-मरण से मुक्ति का मार्ग खुलता है। यदि मनुष्य वेदों की शरण में आकर सभी प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर ले और योग्य विद्वानों व आचार्यों से विद्या प्राप्त कर योगाभ्यास करे तो वह मोक्ष मार्ग का पथिक बन जाता है जिससे इसी जन्म व कुछ जन्मों बाद उसकी मुक्ति व मोक्ष की आशा की जा सकती है। हमारे सभी ऋषि-मुनि तथा योगी इसी मार्ग का अनुशरण करते थे।

आधुनिक युग में 137 वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने भी इसी मार्ग का अनुशरण किया था। उन्होंने मानव जाति के उपकार के इतने कार्य किये हैं जितने पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के पश्चात किसी ऋषि व विद्वान ने संसार में नहीं किये। हमारा सौभाग्य है कि हम भारत में पैदा हुए और हमें यहां आर्यसमाज से जुड़ने का अवसर मिला है जिससे हम मनुष्य जाति के सभी कर्तव्यों को जानने सहित इस संसार में अनादि तीन पदार्थों को जान सके हैं।

इसके साथ ही हम ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना सहित परोपकार व दान आदि कर्मों का महत्व भी जान सकें हैं। ईश्वर की उपासना की सत्य विधि जिससे ईश्वर का साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति होती है, वह भी महर्षि दयानन्द ने हमें बताई है। हमारा यह संसार अपौरुषेय रचना है। मनुष्य वा पुरुष भी रचना करते हैं परन्तु मनुष्य जो रचना करता है वह अल्पसामर्थ्य युक्त रचनायें होती हैं।

➲➲

प्रेरक वचन

- प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वे अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढ़िया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखे जो सहस्त्रों वर्षों के पश्चात स्वामी दयानन्द ने पुनः प्रसारित किया है।
- यदि हमारे ऊंचे होंगे तो हम मुक्ति पाएंगे अन्यथा नहीं। आर्य समाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी। मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर है। कर्म भी एक यज्ञ है।
- आर्य समाज ने कभी इस बात का प्रचार नहीं किया कि हमको ऋषि दयानन्द के पारिवारिकजनों की पूजा करनी चाहिए। हमने आज तक ऋषि की स्मृति में कोई मंदिर अथवा पवित्र स्थान नहीं बनाया।

कोरोना वाइरस और मानवजाति का भविष्य

कोरोना वायरस अकल्पनीय गति से फैल रहा है! ऑफीशियली 13 मार्च तक लगभग दो लाख लोग विश्व भर में इससे संक्रमित हो चुके हैं! किंतु गैर सरकारी सूत्रों का अनुमान इससे बहुत अधिक है! इतना अधिक कि हम पैनिक कर सकते हैं! 118 देशों में यह फैल चुका है! यही कारण है कि WHO ने इसे Pandemic वैश्विक महामारी डिक्लेयर कर दिया है! साथ ही यह अनुमान लगाया है कि यह सार्स, HIV, इबोला, जीका, स्वाइन फ्लू से कहीं अधिक बड़ा खतरा है! इसके अनियंत्रित फैलाव के दो बड़े कारण हैं एक-इनक्यूबेशन पीरियड में इसका पता न चलना। यानी इस वाइरस के Symptoms प्रकट होने में करीब दो हफ्ते लग जाते हैं। (तब तक संक्रमित व्यक्ति न जाने कितने लोगों के संपर्क में आ चुका होता है)

दूसरा-यह वाइरस Animals और पक्षियों के मार्फत भी पहुंचता है। लिहाजा, अभी तक किसी को यह पता ही नही है कि यह वाइरस कितने जानवरों या पक्षियों में फैल चुका है। तीसरा-ग्लोबलाइजेशन यह ग्लोबलाइ-जेशन का ही प्रताप है कि कोरोनावाइरस चीन के वुहान शहर से निकलकर इतनी द्रुतगति से अन्य देशों में पहुंच गया। अब इसका सामना पूरे विश्व को एकसाथ ही करना होगा, करेंगे भी।

किंतु मेरे देखे यह सिर्फ आकस्मिक उत्पन्न महामारी नहीं है। इसने विभिन्न देशों की संस्कृति और खानपान की आदतों को भी कटघरे में खड़ा कर दिया है। निरीह जानवरों का वध, बेतहाशा मांसाहार का सेवन, क्रूर और जघन्य तरीकों से मांसाहारी भोज्य पदार्थों का निर्माण और सेवन तथा इस वीभत्स आदतों का पोषण और समर्थन करने वाली संस्कृति, धर्म और दर्शन भी क्यूं ना कटघरे में खड़े किए जाएं?

आखिर इन्हीं कारणों से विश्व बारंबार महामारियों के संकट में घिरता आया है। फिर महामारी ही क्यों, अन्य देशों पे आक्रामण, राज्य का फैलाव हिंसा, रक्तपात, लूट, आधिपत्य जमाने का समर्थन करने वाले विचार भी क्यों न कटघरे में खड़े किए जाएं?

अगर एकल विश्व की अवधारणा से ही आगे बढ़ना है तो विश्व को इस धरती पर उपलब्ध सर्वोत्तम बुद्धिमत्ता से ही चलना होगा। वर्ना कमअक्ल संस्कृतियां विश्व का विनाश करके रख देंगीं। अब वो समय आ गया है कि भारतवर्ष को विश्व का नेतृत्व अपने हाथ में लेना ही होगा। इस संकट के बाद, विश्व में सभी को वैदिक आर्यों की दूरदर्शी, विश्वदृष्टि, पर्यावरण संरक्षण और प्राणीमात्र के प्रति प्रेम, करुणा और अहिंसा की संस्कृति याद आने लगी है।

विश्व के बड़े-बड़े राष्ट्राध्यक्ष अब हाथ नही मिला रहे, बल्कि 'नमस्ते' कर रहे हैं। मृत शरीर का अग्निदाह ही सर्वोत्तम है सिद्ध हो गया है। शरीर के डीटॉक्सिफिकेशन और मज़बूत इम्युनिटी हेतु किए जाने वाले ऋतु परिवर्तन के उपवास व कर्मकांड, बैक्टीरिया, वाइरस उन्मूलन हेतु किए जाने वाले यज्ञ, हवन आदि सभी क्रियाकलापों की वैज्ञानिकता अब सामने आने लगी है। जो भी श्रेष्ठ है उसका सम्मान होना चाहिए, उसे स्वीकार किया जाना चाहिए, उसकी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। क्योंकि WHO के अनुसार फिलहाल कोरोना वाइरस से

बचाव का एकमात्र हथियार सिर्फ हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली ही है। यानी ईश्वर प्रदत्त शारीरिक व्यवस्था किसी भी व्यवस्था से बढ़कर है। तो कम से कम हम उस ईश्वर के प्रति धन्यवाद तो ज्ञापित करें। जिसने हमारे शरीर को ही वह सब अस्त्र-शस्त्र दिए हैं, जो किसी भी बाहरी हमले से हमारी सदा सुरक्षा करते हैं। कोरोना वाइरस ने प्राकृतिक इम्यूनिटी के साथ-साथ इस ओर भी संकेत कर दिया है कि प्राकृतिक जीवन शैली ही सर्वश्रेष्ठ है।

नंगे पैर चलें, धूप सेकें, मिट्टी के संपर्क में रहें, AC में न रहें, मिट्टी के बर्तन में पानी रखें, न कि प्लास्टिक में, घर को बहुत ज़्यादा बंद न रखें, हवा धूप आने दें। ऐसे हज़ार तरीके हैं प्राकृतिक जीवन के जिनसे प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। ईश्वर ने जो सिस्टम हमें दिया है वो सर्वश्रेष्ठ है।

थोड़ा अंतर्मुखी हो जाएं, उस परम सत्ता से संपर्क बनाएं, थोड़ा ध्यान, प्राणायाम, प्रार्थना-प्रेयर भी करें! भोग से बाहर निकलें, योग की शरण में भी आएं। आयुर्वेद की शरण में आएं और थोड़ा विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक संस्कृति की प्रतिस्थापना में सहभागी बने। भारतवर्ष से निकले तीनों धर्म-हिंदू, जैन और बौद्ध इनका अध्ययन भी किया करें। इनमें उत्तम स्वास्थ्य और उत्तम विश्व निर्माण के सब सूत्र छिपे हैं। हज़ार ख़तरे टले हैं यह भी टल जाएगा। किंतु अब चेत जाने का वक्त आ गया है। ○○

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

आर्याणां परमप्राचीनधर्ममूलको ग्रंथो वेदो विद्यन्ते जायन्ते लभ्यन्ते वा धर्मादिपुरुषार्था एभिरिति वेदाः। ज्ञानार्थकाविद्धातोर्घञि प्रत्यये रूपमिदं सिद्ध्यति। सायणाचार्येण तु कृष्णयजुर्वेदीय भूमिकायामुक्तम्–

प्रत्यक्षेणानुमित्या वान्यस्तूपायो न विद्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्याद् वेदस्य वेदता॥

एवं वेदो हि नाम अशेषज्ञानाविज्ञानराशिः। आम्नयः, आगमः, श्रुतिः, वेदः, निगम इति समानार्थाः। इष्ट प्राप्ति–अनिष्ट परिहार योरलौकिकमुपायं यो वेदयते, स वेद इति सायणेन प्रतिपादितम्। अतो वेदः खलु अशेषविश्वविज्ञान विशेषवरिज्ञानप्रदं शाश्वतिकमपौरुषेयं शास्त्रः। वेदेषु मनुष्याणां कर्मादिभेदतः पञ्चविभागाः विद्यन्ते–ब्राह्मणः, क्षत्रियः, वैश्यः, दासः, दस्युश्च। एषु दस्युः खलु अनार्थः। आर्याश्चत्वारो पश्चाज्जातिपदेन प्रचलिताः। परं सर्वेः प्रीतिभावेन वर्तितव्यमिति निर्दिष्टं अथर्ववेदे–

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यतः उत शूद्र उताये इति॥

मानवजीवनं चतुर्षु भागेषु विभक्तं विद्यते। ते च भागाः आश्रमा उच्यन्ते–ब्रह्मचर्य–गृहस्थ–वानप्रस्थ संन्यासलक्षणाः। पञ्चविंशतिवर्षाणि यावत् एकस्मित्राश्रमे विश्रम्य चत्वारोऽप्याश्रमाः सेव्याः सोऽयं प्रथमो ब्रह्मचर्याश्रमः मानव जीवनस्याधारभूतः। यतः स एव शारीरिकी मानसो च शक्तिं विकासयति। तथा हि–

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नतः।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वरामरत॥

ब्रह्मचर्यकाले ब्रह्मचारिणो गुरुकुलाश्रमे निवसन्त आचार्यसकाशात् विविधा विद्याः शिक्षन्ते स्म। एवं वेदेषु स्त्रीपुरुषयाः समाननिकार उपदिष्टः। उभयोः शिक्षाः दीक्षा च समावभावेन सम्पादनीया। षोडशसंस्कारेषु विवाहः प्रधानतमः। वेदानामपौरुषेयत्वं नित्यत्वं चादाय सर्वेऽपि प्राचीनाचार्याः स्वीचक्रुः यत् प्रलयकालेऽपि वेदराशिः स्थितः।

वेदप्रतिपादितो धर्मों वैदिकधर्म इति कथ्यते। वैदिकधर्मे ईश्वरः, अजरः, अमरः, नित्यः, शुद्धो, व्यापकः, सर्वशक्तिमान्, जगन्नियन्ता, सर्वज्ञो, न्यायशीलः शुभाशुभकर्मफलदाता च। यदुक्तम्– 'एवं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति।' एवश्च–

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

वेदे मोक्षानन्दस्यस्वरूपस्य वर्णनं दृश्यते। 'भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्' इत्यादि ऋचा पुनर्जन्मसंबंधित्वं स्पष्टम् प्रतिपादितमस्ति। वेदे राष्ट्रभावनाऽपि सम्यक् प्रदर्शिता विद्यते। निखिलञ्जगत् राष्ट्रत्वेनाभिः हितम्। तादृशराष्ट्रस्य राजापि तादृशो भवेत्, यं सर्वाः प्रजाः वाञ्छेयुस्तदुक्तम्– 'ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो वृहस्पतिः' इति। ततो 'राष्ट्रबलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसनमन्तु' इति च। एवमेव गोमनुष्याश्वादिर्मासभक्षण निषेधः, कृते च भक्षणे दण्डविधानश्च तत्र प्रदर्शितम्।

तथा च ऋग्वेदस्य दशममण्डले, अक्षाद्यूतक्रीडाया निन्दा निषेधश्वोपदिष्टः। यथा– 'अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्ववित्तै रमस्व बहुमन्यमानः' इति। एवमेव वेदे मनुष्याणां कर्त्तव्याकर्त्तव्ययोः नम्यक्विधिनिषेधयोः निर्णयो विद्यते। एवमेव विविधा जनकल्याणकारिण उपदेशाः परामर्शाश्च निर्दिष्टाः सन्ति। तेषामनुष्ठानेन मानव समाजस्य नितरां कल्याणं भवति। अतः सत्यमेवोक्तम्– 'वेदोऽखिला धर्ममूलम्' इति!!

OO

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **उपासना** : जिसे करके ईश्वर ही के आनंद स्वरूप में अपने आत्मा को मग्न करना होता है, जिसको 'उपासना' कहते हैं।
- **निर्गणोपासना** : शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, संयोग-वियोग, हल्का, भारी, अविद्या, जन्म, मरण और दुख आदि गुणों से रहित परमात्मा को जानकर जो उसकी उपासना करनी है, उसको 'निर्गुणोपासना' कहते हैं।
- **सगुणोपासना** : जिसकी सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, शुद्ध, नित्य, आनंद, सर्वव्यापक, एक सर्वकर्ता, सर्वाधिकार, सर्वस्वामी, सर्वनियंता, सर्वांतर्यामी, मंगलमय, सर्वानंदप्रद, सर्वपिता, सब जगत् का रचने वाला, न्यायकारी, दयालु आदि सत्यगुणों से युक्त जानके जो ईश्वर की उपासना करनी है, सो 'सगुणोपासना' कहाती है।
- **मुक्ति** : अर्थात् जिससे सब बुरे कामों और जन्म-मरणादि दुखसागर से छूटकर सुखस्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होके सुख ही में रहना 'मुक्ति' कहाती है।

'स्वामी स्वतंत्रानंद महर्षि दयानन्द के प्रमुख योग्यतम शिष्य'

स्वामी स्वतंत्रानंद
स्मृति : 4 अप्रैल

स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज आर्यसमाज के अनूठे संन्यासी थे। आपने अमृतसर के निकट सन् 1936 में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की और वेदों का दिगदिगन्त प्रचार कर स्वयं को इतिहास में अमर कर दिया। आपके बाद आपके प्रमुख शिष्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती इसी मठ के संचालक व प्रेरक रहे। स्वामी सर्वानन्द जी लिखते हैं कि पूज्यपाद सन्त शिरोमणि स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज इतिहास के एक जाने-माने विद्वान् थे। प्रो. राजेंद्र 'जिज्ञासु' ने पूज्य स्वामी जी महाराज का जीवन-चरित लिखा है और 'इतिहास दर्पण' नाम से स्वामी जी महाराज के प्रेरणाप्रद लेखों की खोज, संकलन व सम्पादन किया है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज प्रतिवर्ष तीन बार दीनानगर मठ में कथा किया करते थे। सदा नई-नई घटनाएं और नये-नये उदहरण दिया करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हरियाणा का भ्रमण किया।

हरियाणा सैनिक भर्ती का बहुत बड़ा क्षेत्र है। श्री स्वामीजी ने हरियाणा के जवानों को देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दी थी। उनके देश-प्रम को उबारा। तब देश के अन्दर 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चल रहा था और देश से बाहर आजाद हिन्द सेना देश को गुलामी के बन्धन से मुक्त करने के लिए लड़ रही थी। श्री महाराज की इस ऐतिहासिक यात्रा में श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती व आचार्य भगवानदेव जी, परवर्ती नाम स्वामी ओमानन्दसरस्वती उनके साथ रहे। इनका कहना था कि स्वामी जी महाराज प्रतिदिन नया-नया इतिहास और नई-नई घटनाएं सुनाते थे।

विख्यात शिक्षाविद् विद्यामार्तण्ड आचार्य प्रियव्रतजी कहा करते थे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आर्यसमाज के इतिहास की छोटी-बड़ी घटनाओं का जितना ज्ञान था उतना और किसी को नहीं। आश्चर्य इस बात पर होता था कि यह सारा ज्ञान उन्हें स्मरण वा कंठस्थ था। डायरी या नोट बुक देखने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। भारत के प्राचीन इतिहास की बातें भी स्वामीजी महाराज यदा-कदा सुनाया करते थे। एक बार प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जयचन्द्र विद्यालंकार दीनानगर मठ, निकट अमृतसर में आये। आपने स्वामीजी महाराज से प्राचीन भारत के नगरों व प्रदेशों के नाम पूंछें। स्वामी जी ने उनकी सारी समस्या का समाधान कर दिया और एतद्विषयक एक लेख भी पत्रों में प्रकाशित करवाया। पं. चमूपति जी आर्यजगत् के एक अद्भुत लेखक, कवि व विचारक थे। आपकी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रति असीम श्रद्धा थी। आप लाहौर में स्वामीजी महाराज से इतिहास-विषय पर घंटों चर्चा किया करते थे। आपने लिखा है कि स्वामीजी को इतिहास की खोज का चस्का है। स्वामीजी महाराज को विभिन्न प्रदेशों, वर्गों व जातियों के इतिहास व रीति-नीति का सूक्ष्म ज्ञान था।

किस मत की कौन-सी बात कैसे आरम्भ हुई, कौन-सा मत कैसे पैदा हुआ, उसने संसार का क्या व कितना हित-अहित किया, विश्व पर कितना प्रभाव छोड़ा, इन सब बातों की विस्तृत विवेचना स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी किया करते थे। श्रोता व पाठक स्वामी जी महाराज के गंभीर ज्ञान को देख, सुन व पढ़कर आश्चर्य करते थे। सिख इतिहास के भी स्वामीजी मर्मज्ञ थे। सिखमत किन परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ, क्या कारण थे, सिखपंथ कैसे बढ़ा, इसने देश के लिए क्या किया, कहां भूल की-सिख गुरुओं का वास्तविक मन्तव्य क्या था, लोगों ने इसे कितना समझा और देश पर इसका क्या प्रभाव पड़ा, इन सब बातों का उन्हें गहरा व प्रामाणिक ज्ञान था। जाने-माने सिख विद्वान् प्रिंसिपल गंगासिंह जी की प्रार्थना पर आपने सिख मिशनरी कालेज में सिख इतिहास पर एक सप्ताह तक व्याख्यान दिये। व्याख्यानमाला की समाप्ति पर जब प्रिंसिपल गगासिंह जी ने प्रश्न पूछने को कहा तो सबने यह कहा कि हमें कोई शंका नहीं है। हमें स्वामीजी ने तृप्त कर दिया है। प्राचार्य जोधासिंह जी तो दयानन्द मठ, दीनानगर में आकर आपसे बहुत विषयों पर चर्चा किया करते थे।

इतिहास की घटनाओं के कारणों व परिणामों को स्वामीजी महाराज बहुत अच्छे ढंग से समझाया करते थे। एक बार उदार विचार के एक मौलाना ने जो आर्य विद्वानों के सम्पर्क में थे, स्वामी जी के सामने कुछ शंकाएं रखीं। आपने मौलवी जी के सब प्रश्नों के उत्तर दिये। आपके विचार सुनकर उस मौलाना ने कहा इस्लाम-विषयक आपके गहरे ज्ञान से मैं बहुत प्रभावित हूं। मैंने ऐसी युक्तियुक्त प्रमाणिक बातें कभी नहीं सुनी। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के इतिहास विषयक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित इतिहास विषयक लेखों का एक संलकन 'इतिहास दर्पण' नाम से सन् १९९७ में प्रकाशित हुआ जिसका सम्पादन प्रसिद्ध विद्वान, लेखक, विचारक और इतिहासकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने किया है। स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुस्तक और प्रो. जिज्ञासु जी के परिचय में लिखा है कि आपने इस 'इतिहासदर्पण' ग्रन्थ के लिए बहुत परिश्रम किया है।

शत्-शत् नमन!

➲ **संकलन : आर्ष गुरुकुल , नोएडा**

अमर हुतात्मा महाशय राजपाल

बलिदान दिवस
6 अप्रैल, शत्-शत् नमन

महाशय राजपाल (जन्म : 1885, अमृतसर; मृत्यु : 6 अप्रैल, 1929) हिन्दी की महान सेवा करने वाले लाहौर के निवासी थे। उनका लाहौर में प्रकाशन संस्थान था। वह खुद भी विद्वान थे। राजपाल पक्के आर्य समाजी थे और विभिन्न मतों का अपनी पुस्तकों में तार्किक ढंग से खंडन करते थे। देश के बंटवारे के बाद राजपाल का परिवार दिल्ली चला आया था। 'रंगीला रसूल' के प्रकाशन के बाद से महाशय राजपाल जी पर तीन जानलेवा हमले हुए, जिसमें 6 अप्रैल, 1929 को महाशय राजपाल अपनी दुकान पर विश्राम कर रहे थे, तभी इल्मदीन नामक एक मतान्ध मुसलमान ने महाशय जी की छाती में छुरा घोंप दिया, जिससे महाशय जी का तत्काल प्राणांत हो गया। हत्यारे को कुछ युवकों द्वारा दौड़कर पकड़ लिया गया था। उसे लाहौर उच्च न्यायालय से फांसी की सज़ा हुई थी। 1924 में उन पर मुक़दमा शुरू हुआ था और 1929 में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पांच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें। राजपाल जी ने एक ही उत्तर दिया कि 'मैं विचार-स्वातंत्र्य और प्रकाशन की स्वतंत्रता में विश्वास रखता हूं और अपनी इस मान्यता के लिए बड़े से बड़ा दंड भुगतने के लिए तैयार हूं। आर्य समाज को उन पर नाज है! आर्ष गुरुकुल नोएडा का छात्रावास उन्हीं की स्मृति है।

जन्म दिवस
19 अप्रैल, शत्-शत् नमन

महात्मा हंसराज : आर्यसमाज नेता एवं शिक्षाविद

भारत में शिक्षा के प्रसार में डीएवी विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से प्रसिद्ध हुए ग्राम बैजवाड़ा, जिला होशियारपुर, पंजाब में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। वह शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी उन्होंने 22 वर्ष की आयु में डीएवी स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में अवैतनिक सेवा आरंभ की जिसे वह 25 वर्षों तक करते रहे। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। लाला हंसराज अविभाजित भारत के पंजाब के आर्य समाज के एक प्रमुख नेता एवं शिक्षाविद् थे। पंजाब भर में दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने के कारण उनकी कीर्ती अमर है। देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए, 15 नवम्बर, 1936 को महात्मा हंसराज जी ने अंतिम सांस ली। उनके द्वारा किए गए सेवा कार्य उल्लेखनीय है।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

जन्म दिवस
26 अप्रैल, शत्-शत् नमन

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालान्तर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व विद्वत्ता एवं गम्भीर वक्तृत्व-कला के धनी पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान के प्रसिद्ध 'वीर सरदाना' कुल में हुआ था। आपके पिता लाला रामकृष्ण फारसी के विद्वान थे। पंजाब के शिक्षा विभाग में झंग में अध्यापक थे। विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कृट लगन के कारण वे अपने साथियों में अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इंडिया' तथा 'ग्रीस इन इंडिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतशः ग्रन्थ पढ़ लिये। वे मार्च, 1886 में पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. में सर्वप्रथम रहे। तत्कालीन महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने 20 जून 1880 को आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय उनके सहाध्यायी तथा मित्र थे। आर्य समाज को उन पर नाज है! स्वामी दयानन्द जी के अंतिम समय पर उनका ईश्वर विश्वास (ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो) से नास्तिक से आस्तिक बन गए। आर्यसमाज की सेवा समाज सेवा व अधिक कार्य करने के लिए उनका छोटी आयु में बीमारी के कारण देहांत हो गया। आर्यसमाज के नियमों को अपनी पीठ पर लिखकर घूमते थे।

महात्मा हंसराज : एक आदर्श आचार्य

प्रो. शशि प्रभा कुमार

भारतवर्ष की पुण्य भूमि पर जन्म लेने वाली महान विभूतियों में से अन्यतम हैं महात्मा हंसराज, जिनका जन्म 19 अप्रैल, 1864 को पंजाब प्रांत के छोटे से गांव बजवाड़ा- होशियारपुर में हुआ था। डीएवी शिक्षण संस्थाओं के प्रवर्त्तक महात्मा जी के 155वें जन्मदिवस पर उनकी स्मृति में समर्पित है यह भावांजलि! 'महात्मा सर्वभूतात्मा' इस लक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि जिस व्यक्ति का हृदय 'स्व' से ऊपर उठकर 'सर्व' के साथ अभिन्न हो जाता है- उसी का महात्मा कहलाना सार्थक है।

विचित्र संयोग की बात है कि हमारे देश में जिन दो महापुरुषों को 'महात्मा कहा गया, उनमें से महात्मा गांधी की 150वीं जन्मशती इसी वर्ष मनाई जा रही है। महात्मा हंसराज और महात्मा गांधी इन दोनों विभूतियों के व्यक्तित्व में कुछ विलक्षण समानताएं पाई जाती है, जैसे- दोनों का जन्म साधारण व्यापारी परिवारों में हुआ किंतु दोनों ने उच्चशिक्षा प्राप्त की, दोनों के प्रारंभिक जीवन में कुछ ऐसी अप्रिय धटनाएं हुई जिन्होंने उन्हें उद्वेलित किया और उनके जीवन की दशा बदल दी- महात्मा गांधी का दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन से धकेला जाना और महात्मा हंसराज को ईसाई मिशनरी विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा वैदिक धर्म के प्रति आस्थापूर्ण आग्रह के लिए दंडित किया जाना। इन दोनों महापुरुषों का शारीरिक गठन सामान्य किन्तु नैतिक और आत्मिक बल असामान्य था, दोनों ने गृहस्थ में रहकर भी संन्यासियों जैसी सादगी भरी तपस्या की। एक ने अपने दृढ़ सङ्कल्प एवं सतत अध्यवसाय के बल पर देशवासियों को विदेशी दासता से मुक्त कराया तो दूसरे ने अपने त्याग एवं समर्पण द्वारा देश की भावी पीढ़ियों को अज्ञान के बंधन से मुक्त कराया और वैदिक ज्ञान का प्रशस्त पथ दिखाया।

महात्मा हंसराज की आरंभिक शिक्षा। एक ईसाई मिशनरी विद्यालय में हुई। किन्तु पहली बार महर्षि दयानन्द का प्रेरक व्याख्यान सुनते ही उनके विचारों में ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ कि वे वैदिक ज्ञान के सशक्त प्रहरी बन गये। महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व पर दयानन्द के इस पारस प्रभाव का और गहरा रग चढ़ाया- लाला लाजपत राय, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला सांईदास की संगति ने। इन लोगों के साथ मिलकर उन्होंने लाहौर में पहला डीएवी विद्यालय खोला और स्वं सर्वथा सुयोग्य होते हुए भी किसी सरकारी नौकारी की तलाश न करके युवक हंसराज ने अपना जीवन इसी उद्देश्य की सफलता हेतु समर्पित कर दिया।

यह महात्मा हंसराज की आजीवन साधना का ही सुफल है कि आज डीएवी नाम से देश-विदेश में लगभग सात सौ शिक्षण संस्थाएं चल रही है, जिनमें लाखों बालक-बालिकाएं और युवक-युवतियां आदर्श शिक्षा ग्रहण कर रहे है। जैसा कि 'दयानन्द एंग्लो वैदिक' डीएवी नाम से ही स्पष्ट है- इसकी पृष्ठभूमि महात्मा हंसराज के तपस्वी व्यक्तित्व से प्रेरित है। महात्मा जी को अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी में चलाई जाने वाली पत्रिका Regenerator of Arvavarta का प्रथम संपादक होने का गौरव उनके उत्कृष्ट अंग्रेजी ज्ञान के कारण मिला, किंतु वैदिक धर्म के प्रति उनकी अटूट आस्था उनके संस्कृत-ज्ञान के द्वारा ही सम्पुष्ट हुई, इसमें सन्देह नहीं। प्राचीन और नवीन, पौवात्य और पाश्चात्य, नैतिक और भौतिक, अंग्रेजी और संस्कृत का मणिकाश्चन संयोग डीएवी आंदोलन की एक ऐसी अद्भुत विशेषता है जो महात्मा जी की दूरदर्शी दृष्टि से जन्मी और उनके व्यक्तिगत आचरण से पल्लवित हुई।

आधुनिक युग में जब शिक्षा केवल सूचनाओं के संग्रह पर केंद्रित है और संस्कारों की सर्वथा उपेक्षा हो रही है, तब उक्त समन्वयवादी आदर्श की अपेक्षा नितांत अनुभव की जा रही है। कहना न होगा कि महात्मा हंसराज ने न केवल इस आदर्श को मूर्त्तरूप प्रदान किया, अपितु अपने सर्वस्व-समर्पण के द्वारा उसे आजीवन सशक्त भी बनाया। हमारे प्राचीन शास्त्रों में आदर्श (स्वयमाचरति यस्मादाचारं स्थापयत्यपि। आचिनोति च शस्त्राणि आचार्यस्तेन उच्चते।। बह्मपुराण, पूर्वभाग- 32/33) का जो प्रतिमान दिया गया है, उसके अनुसार शिक्षक केवल विषय का ज्ञान नहीं कराता अपितु अपने आचरण के द्वारा शिष्यों को आचार्य की शिक्षा देता है, उनके बुद्धि को तीक्ष्ण बनाता है तथा विषयों का ग्रहण भी कराता है- आचार्य: कस्मात्? आचार ग्राहयति, आचिनोति बुद्धिमाचिनोति अर्थान्। (निरुक्त 1/4) महात्मा हंसराज ने 22 वर्ष की आयु में यह संकल्प लिया था कि वे महर्षि

दयानन्द की स्मृति में प्रारम्भ किये जाने वाले डीएवी विद्यालय के अवैतनिक प्रधानाचार्य के रूप में आजीवन कार्य करेगे। निस्संदेह उन्होंने ऋषि-ऋण से उऋण होने का स्तुत्य संकल्प विकटतम परिस्थितियों में भी जितनी निष्ठा एवं सादगी से निभाया, वह अकल्पनीय है।

विशेष उल्लेखनीय है कि महात्मा जी न केवल विद्यालय का (बाद में प्राचार्य बनकर महाविद्यालय का) प्रबंधक देखते थे, अपितु सायंकाल छात्रों को पढ़ाने का और रात्रि में छात्रावास के संचालक का दायित्व भी स्वयं निभाते थे। एक दृढ, अनुशासनप्रिय एवं स्वावलम्बी आचार्य के रूप में उनकी निस्पृह सेवा का ही प्रताप था कि 300 छात्रों से प्रारम्भ हुआ एक माध्यमिक विद्यालय न केवल तीन वर्षों में 769 छात्रों के लिए प्रतिष्ठित महाविद्यालय बन गया, अपितु सरकारी पंजीकरण, अनेक छात्रवृत्तियों और पुरस्कारों का भाजन भी बना यह सब बिना किसी शासकीय अनुदान के सम्मव हो पाया तो इसलिए कि इसके पीछे महात्मा जी का अनुपम अध्यवसाय था। किन्तु यह भी संसार का कटु सत्य है कि सर्वस्व आहुत करने वाले दधीचितुल्य व्यक्तियों के जीवन निष्कंटक नहीं होते, निंदा-अपमान एवं अकारण आलोचना का विषपान ही उनकी नियति होती है क्योंकि सामान्य बुद्धि वाले स्वार्थी जन उनके अलौकिक आचरण को समझ ही नहीं पाते और उनसे द्वेष करते हैं-

आलोकसामान्यमचिन्त्यहेतुकं द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्।। (कालिदास, कुमार सम्भवम् 5/75)

महात्मा हंसराज के जीवन में भी ऐसे अनेक विकट संकट आये जब उनके धैर्य एवं आस्तिकता की कठोरतम परीक्षा हुई, परिवार एवं समाज-दोनों स्तरों पर उन्हें भीषण चुनौतियों का सामना करना पड़ा, किन्तु धन्य है उनके संस्कार तथा श्लाघ्य है उनकी आस्था जिसने उन्हें टस से मस नहीं होने दिया। ऐसे महनीय व्यक्तियों के है विषय में ही कहा गया है- निंदन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्। अद्यैव वा मरणमस्तु युगांतरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। अर्थात् नीति कुशल विद्वान व्यक्ति निंदा करें या प्रशंसा, घन-लक्ष्मी अपनी-इच्छानुसार आये या चली जाये, मुत्य भले ही आज हो या वर्षों बाद किंतु धिर जन न्यायसंगत मार्ग से कभी विचलित नहीं होते। ■■

उत्तम बुद्धि से जीवन में सफलता मिलती है

एक राजा था। वह बेहद न्यायप्रिय, दयालु और विनम्र था। उसके तीन बेटे थे। जब राजा बूढ़ा हुआ तो उसने किसी एक बेटे को राजगद्दी सौंपने का निर्णय किया। इसके लिए उसने तीनों की परीक्षा लेनी चाही। उसने तीनों राजकुमारों को अपने पास बुलाया और कहा, 'मैं आप तीनों को एक छोटा सा काम सौंप रहा हूं। उम्मीद करता हूं कि आप सभी इस काम को अपने सर्वश्रेष्ठ तरीके से करने की कोशिश करेंगे।' राजा के कहने पर राजकुमारों ने हाथ जोड़कर कहा, पिताजी, आप आदेश दीजिए। हम अपनी ओर से कार्य को सर्वश्रेष्ठ तरीके से करने का भरपूर प्रयास करेंगे। राजा ने प्रसन्न होकर उन तीनों को कुछ स्वर्ण मुद्राएं दीं और कहा कि इन मुद्राओं से कोई ऐसी चीज खरीद कर लाओ जिससे कि पूरा कमरा भर जाए और वह वस्तु काम में आने वाली भी हो।

यह सुनकर तीनों राजकुमार स्वर्ण मुद्राएं लेकर अलग-अलग दिशाओं में चल पड़े। बड़ा राजकुमार बड़ी देर तक माथापच्ची करता रहा। उसने सोचा कि इसके लिए रुई उपयुक्त रहेगी। उसने उन स्वर्ण मुद्राओं से काफी सारी रुई खरीद कर कमरे में भर दी और सोचा कि इससे कमरा भी भर गया और रुई बाद में रजाई भरने के काम आ जाएगी। मंझले राजकुमार ने ढेर सारी घास से कमरा भर दिया। उसे लगा कि बाद में घास गाय व घोड़ों के खाने के काम आ जाएगी।

उधर छोटे राजकुमार ने तीन दीये खरीदे। पहला दीया उसने कमरे में जलाकर रख दिया। इससे पूरे कमरे में रोशनी भर गई। दूसरा दीया उसने अंधेरे चौराहे पर रख दिया जिससे वहां भी रोशनी हो गई और तीसरा दीया उसने अंधेरी चौखट पर रख दिया जिससे वह हिस्सा भी जगमगा उठा। बची हुई स्वर्ण मुद्राओं से उसने गरीबों को भोजन करा दिया। राजा ने तीनों राजकुमारों की वस्तुओं का निरीक्षण किया। अंत में छोटे राजकुमार के बुद्धिपूर्वक निर्णय को देखकर वह अत्यंत प्रभावित हुए और उसे ही राजगद्दी सौंप दी। किसी भी व्यक्ति की योग्यता उसकी बुद्धि और वृतियों से प्रदर्शित होती हैं। वेद में बुद्धि की उत्तम वृतियों के लिए अनेक मंत्रों में प्रार्थना की गई है। ऋग्वेद 6/47/10 में परम ऐश्वर्यवान परमेश्वर से पांच प्रकार की इच्छा पूर्ण करने की प्रार्थना करी गई हैं। प्रथम सुख, द्वितीय दीर्घ जीवन, तृतीय तीक्षण बुद्धि, चतुर्थ परमात्मा से प्रेम और पांचवा विद्वानों का संग। मानव देह दुर्लभ है। इसे व्यसन आदि से निकृष्ट बनाना मूर्खता है। श्रेष्ठ कर्म करने से सुख की प्राप्ति होगी। सुख के भोग के लिए दीर्घ जीवन की आवश्यकता है। दीर्घ जीवन को उत्तम प्रकार से जीने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है।

■ **डॉ. विवेक आर्य**

मृत्युभोज : समाज में फैली कुरीति है व समाज के लिये अभिशाप है

महाभारत के अनुशासन पर्व में लिखा है कि मृत्युभोज खाने वाले की ऊर्जा नष्ट हो जाती है। जिस परिवार में मृत्यु जैसी विपदा आई हो उसके साथ इस संकट की घड़ी में जरूर खड़े हों और तन, मन, धन से सहयोग करें, लेकिन बारहवीं या तेरहवीं पर मृतक भोज का पुरजोर बहिष्कार करें।

महाभारत का युद्ध होने को था, अत: श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के घर जाकर युद्ध न करने के लिए संधि करने का आग्रह किया। दुर्योधन द्वारा आग्रह ठुकराए जाने पर श्रीकृष्ण को कष्ट हुआ और वह चल पड़े, तो दुर्योधन द्वारा श्रीकृष्ण से भोजन करने के आग्रह पर कृष्ण ने कहा कि 'सम्प्रीति भोज्यानि आपदा भोज्यानि वा पुनै:' अर्थात् 'जब खिलाने वाले का मन प्रसन्न हो, खाने वाले का मन प्रसन्न हो, तभी भोजन करना चाहिए। लेकिन जब खिलाने वाले एवं खाने वालों के दिल में दर्द हो, वेदना हो, तो ऐसी स्थिति में कदापि भोजन नहीं करना चाहिए।'

हिन्दू धर्म में मुख्य 16 संस्कार बनाए गए हैं, जिसमें प्रथम संस्कार गर्भाधान एवं अंतिम तथा 16वां संस्कार अंत्येष्टि है। इस प्रकार जब सत्रहवां संस्कार बनाया ही नहीं गया तो सत्रहवां संस्कार तेरहवीं का भोज कहां से आ टपका। किसी भी धर्म ग्रन्थ में मृत्युभोज का विधान नहीं है। बल्कि महाभारत के अनुशासन पर्व में लिखा है कि मृत्युभोज खाने वाले की ऊर्जा नष्ट हो जाती है। लेकिन हमारे समाज का तो ईश्वर ही मालिक है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती, पं. श्रीराम शर्मा, स्वामी विवेकानन्द जैसे महान मनीषियों ने मृत्युभोज का जोरदार ढंग से विरोध किया है। जिस भोजन बनाने का कृत्य... रो रोकर हो रहा हो... जैसे लकड़ी फाड़ी जाती तो रोकर... आटा गूंथा जाता तो रोकर... एवं पूडी बनाई जाती है तो रो रोकर... यानि हर कृत्य आंसुओं से भीगा हुआ। ऐसे आंसुओं से भीगे निकृष्ट भोजन अर्थात बारहवीं एवं तेरहवीं के भोज का पूर्ण रूपेण बहिष्कार कर समाज को एक सही दिशा दें।

जानवरों से भी सीखें, जिसका साथी बिछुड़ जाने पर वह उस दिन चारा नहीं खाता है। जबकि 84 लाख योनियों में श्रेष्ठ मानव, जवान आदमी की मृत्यु पर हलुवा पूडी पकवान खाकर शोक मनाने का ढ़ोंग रचता है। इससे बढ़कर निंदनीय कोई दूसरा कृत्य हो नहीं सकता। यदि आप इस बात से सहमत हों, तो आप आज से संकल्प लें कि आप किसी के मृत्यु भोज को ग्रहण नहीं करेंगे और मृत्युभोज प्रथा को रोकने का हर संभव प्रयास करेंगे। हमारे इस प्रयास से यह कुप्रथा धीरे-धीरे एक दिन अवश्य ही पूर्णत: बंद हो जायेगी। ■■

मानसिक आरोग्य का आधार

शरीर रोगी होने से देह दु:ख पाती है; मन रोगी होने पर हमारा अन्त:करण नरक की आग में झुलसता रहता है। कई व्यक्ति देह से तो निरोग दिखते हैं पर भीतर ही भीतर इतने अशान्त और उद्विग्न रहते हैं कि उनका कष्ट रोगग्रस्तों से भी कहीं अधिक दिखाई पड़ता है। ईष्या द्वेष, क्रोध, प्रतिशोध की आग में जो लोग जलते रहते हैं उन्हें आग से जलने पर छाले पड़े हुए रोगी की अपेक्षा अधिक अशान्ति और उद्विग्नता रहती है।

घाटा, अपमान, भय, आशंका, चिंता, शोक, असफलता, निराशा आदि कारणों से खिन्न बने हुए मन में इतनी गहरी व्यथा होती है कि उससे छूटने के लिए कई तो आत्महत्या तक कर बैठते हैं और कइयों से उसी उद्वेग में ऐसे कुकृत्य बन पड़ते हैं जिनके लिए उन्हें जीवन भर पश्चात्ताप करना पड़ता है। ओछी तबियत के कुछ आदमी हर किसी को बुरा समझने, हर किसी में बुराई ढूंढ़ने के आदी होते हैं, उन्हें बुराई के अतिरिक्त और कुछ कहीं भी-दीख नहीं पड़ता। ऐसे लोगों को यह दुनिया काली डरावनी रात की तरह और हर आदमी प्रेत-पिशाच की तरह भयंकर आकृति धारण किये चलता-फिरता नजर आता है। इस प्रकार की मनोभूमि के लोगों की दयनीय दशा का अनुमान लगाने में भी व्यथा होती है।

क्रूर, निर्दयी, अहंकारी, उद्दण्ड, दस्यु, तस्कर, ढीठ, अशिष्ट, गुंडा प्रकृति के लोगों के शिर पर एक प्रकार का शैतान हर घड़ी चढ़ा रहता है। नशे में मदहोश उन्मत्त की तरह उनकी वाणी, क्रिया एवं चेष्टाएं होती हैं। कुछ भी आततायीपन वे कर गुजर सकते हैं। तिल को ताड़ समझ सकते हैं, खटका मात्र सुनकर क्रुद्ध विषधर सर्प की तरह वे किसी पर भी हमला कर सकते हैं। ऐसी पैशाचिक मनोभूमि के लोगों के भीतर श्मशान जैसी प्रतिहिंसा और दर्प की आग जलती हुई प्रत्यक्ष देखी जा सकती है।

OO पं श्रीराम शर्मा आचार्य

एक सत्य रोचक कथा

हृदय और मष्तिक को ऋषि की वाणी ने झंकृत किया तो उनका रोम-रोम ऋषिवर देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगा और कुछ ही दिनों में ऋषि के समस्त ग्रंथों सहित वृद्धावस्था का परवाह किये बिना संस्कृत व्याकरण पढ़ा और एक दिन में दो-दो, तीन-तीन घंटे और दो-दो, तीन-तीन बार व्याख्यान देते हुए अपने जीवन के अंतिम बारह वर्ष वेद और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार लगा दिये।

स्वामी सर्वदानन्द जी कट्टर शिव भक्त थे। वे स्वयं फूल आदि चुन कर लाते थे और शिवलिंग पर चढ़ा घंटों उनकी पूजा में लीन रहते थे। एक दिन की बात है जब उन्होंने ने बाग से फूल लेकर शिव मंदिर पहुंचे तो देखा कि जिस शिवलिंग को कल फूलों से सजा कर गये थे उस पर एक कुत्ता पेशाब कर रहा था फिर क्या था प्रभु की कृपा हुई और उन्हें उस पत्थर के शिव पर से सदा श्रद्धा उठ गई। फिर कभी भी किसी मंदिर की तरफ उनका कदम नहीं बढ़ा और वेदान्त की तरफ झुक गये।

उन्होंने एक वेदान्ती से संन्यास की दीक्षा लेकर चारोंधाम की तीर्थ यात्रा कर भक्ति में मग्न हो गये। कई-कई दिनों तक उनकी समाधि स्वत: लग जाती थी। इसी वैराग्यावस्था में सर्दियों में वे चित्रकूट चले गये। वहां पर नग्नावस्था में यमुना के किनारे पड़े रहते थे, किसी ने खिलाया तो खा लिया नहीं तो मस्ती में बैठे रहते थे। इसकी वजह से उनको रोग हो गया।

ठाकुर सज्जन सिंह जी को जब इस संन्यासी के रोग का पता चला वे अपने घर उनको बुलाकर उचित औषधि से उन्हें स्वस्थ कर दिया तब स्वामी जी को जाने की इच्छा हुई और ठाकुर सज्जन सिंह जी को बुलाया। ठाकुर जी आर्य समाजी थे और उन्हें मालूम था की स्वामी जी को आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से बहुत घृणा थी, इसलिए ठाकुर जी ने सत्यार्थ प्रकाश को एक कपड़े मे बांध कर स्वामी जी के हाथों में इस वचन के साथ थमा दिया स्वामी जी आप इसे एक बार शुरू से अंत तक पढ़ेगें।

स्वामी जी ने सहर्ष इस बात का वचन दे दिया और चल दिये। मार्ग मे विश्राम के लिए जब कहीं पर ठहरे तो उस पोटली को खोला तो उनका माथा ठनक गया, पहले तो सत्यार्थ प्रकाश को कहीं दूर फेंकना चाहा फिर उस विवेकशील पुरुष ने सोचा कि यदि सत्यार्थप्रकाश इतना ही बुरा है तो फिर उस ठाकुर में साधुओं के प्रति इतनी श्रद्धा, भक्ति और सेवा भाव कैसे है? अपने वचन का पालन करने हेतु उस संन्यासी ने उसे पढ़ना प्रारंभ किया। भूमिका पढ़ते ही पुस्तक के निर्दोष उद्देश्य से वे भलिभांति परिचित हो गये और आंखे खुल गई।

उन्होंने जब सत्यार्थप्रकाश को आद्योपांत पढ़ गया तो उनकी आंखों से झरने की तरह आंसू बहने लगे। मन प्रायश्चित कर रहा था कि सुनी सुनाई बातों पर वे कितने ही दिनों से इस अनमोल ग्रंथ की उपेक्षा करते आ रहे थे। जब उनके हृदय और मष्तिक को ऋषि की वाणी ने झंकृत किया तो उनका रोम-रोम ऋषिवर देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगा और कुछ ही दिनों में ऋषि के समस्त ग्रंथों सहित वृद्धावस्था का परवाह किये बिना संस्कृत व्याकरण पढ़ा और एक दिन में दो-दो, तीन-तीन घंटे और दो-दो, तीन-तीन बार व्याख्यान देते हुए अपने जीवन के अंतिम बारह वर्ष वेद और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार लगा दिये।

हरदुआगंज (अलीगढ़) का साधु आश्रम उन्हीं की देन है। 'सत्यार्थ प्रकाश' व्यक्ति को क्या से क्या बना देता है, स्वामी सर्वदानन्द जी इसके आदर्श उदाहरण हैं।

■■ **संकलन : सहसंपादक**

ओ३म्

- त्याग-तपस्या आदर्शों का पालन करना आदि, ये उत्तम गुण हैं, जो मनुष्य को उन्नति की ओर ले जाते हैं। लोभ-लालच, क्रोध-ईर्ष्या, द्वेष-राग, अविद्या आदि ये दोष हैं, जो मनुष्य को पतन की ओर ले जाते हैं।
- भूतकाल में महापुरुष श्री राम चन्द्र जी ने त्याग-तपस्या एवं उच्च आदर्शों का पालन किया। संपत्ति परिवार भौतिक सुविधाएं आदि छोड़कर, माता-पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए, त्यागी बनकर जंगल में चले गए और अनेक कष्ट सहते हुए तपस्या की। उन्होंने ये सब चीजें तो छोड़ दी, परंतु रक्षा के लिए धनुष बाण को नहीं छोड़ा। उनके इस आचरण से हमें यह शिक्षा मिलती है कि आप और कुछ भले ही छोड़ दें परंतु अपनी रक्षा के साधन न छोड़ें। साधन न हों, तो साधनों का संग्रह करें। हर कीमत पर अपनी रक्षा अवश्य करनी चाहिए। तो अपने पूर्वज महापुरुष श्री रामचंद्र जी के जीवन आचरण से यह बात अवश्य सीखें, तथा अपनी रक्षा अवश्य करें।

❍❍ स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

Maharishi Dayananda and Christianity

Article By - Sita Ram Goel

Continue Old Edition....

They proclaim that since creation and till today, no wise man has been born outside the British fold. The people of Aryavarta have always been idiotic, according to them. They believe that Hindus have never made any progress. Far from honouring the Vedas, they never hesitate in denouncing those venerable Shastras. The book which describes the tenets of Brahmoism has place for Moses, Jesus and Muhammad who are praised as great saints, but it has no place for any ancient rishi, howsoever great. They denounce Hindu society for its division in castes, but they never notice the racial consciousness which runs deep in European society.

They claim that their search is only for truth, whether it is found in the Bible or the Quran, but they manage to miss the truth which is in their own Vedic heritage. They are running after Jesus without knowing what their own rishis have bequeathed to them. They discard the sacred thread as if it were heavier than the foreign liveries they love to wear. In the process, they have become beggars in their own home and can do no good either to themselves or to those among whom they live. 1The critique of Christianity which Dayananda had written at the same time and which formed Chapter XIII of the SatyArth PrakAsha was left out of the first edition by the publisher in Varanasi.

He was a deputy collector in the British administration and thought it prudent not to annoy the missionaries. He dropped Chapter XIV also because it was a critique of Islam and he had many friends among the Muslim gentry of United Provinces. Dayananda himself became heavily preoccupied from 1876 onwards, first in the Punjab and then in Rajasthan. The Arya Samaj he had founded in 1875 was being placed on a firm footing. He had also several other major books in hand. It was only in 1882 that he undertook a revision of the Satyarth Prakash for its second edition. The copy which was sent to the press in installments included the chapters on Christianity and Islam. He did not live to see the second edition which was published an year after his death in 1883. But by now the public at large had come to know his position vis-à-vis Christianity. His two dozen disputations with leading Christian missionaries, mostly in the Punjab, had left nobody in doubt that he had only contempt for the imported and criminal creed.

Dayananda did not know the English language, though he had tried to learn it at one time. He had to depend on Sanskrit and Hindi translations of the Bible done by some leading missionaries. Nor was he acquainted with the critique of Christianity which had, by his time, snowballed in the West. But his handling of the two Testaments shows that these were no disadvantages for him. His sense of logical consistency was quite strong. So was his humane and universal ethics derived from Vedic exegesis. Dayananda concentrated his attention on the character of Jehovah. He found that Jehovah was not only blood-thirsty, vindictive and unjust but also extremely whimsical. Jehovah alone, said Dayananda, could choose a monster like Moses as his prophet and reveal a barbarous book like the Pentateuch. ■■

राम ! तुम्हारा शत अभिनंदन

राष्ट्र पुरुष थे, विश्व विजेता मर्यादापुरुषोत्तम।
महा अनुज थे, सत्यं शिवं सुन्दरम् से भी सुन्दरतम्।
रविकुल के रवि बनकर तुमने नष्ट किया था भूतल तम।
युगस्रष्टा! हे युगद्रष्टा! तुम उत्तम से भी उत्तम।
राम! तुम्हारा शत अभिनंदन।।

भू-मण्डल की असुर वृत्तियों का तुमने संहार किया।
देश धर्म की मर्यादा रख, जगती का उपकार किया।
अन्यायी रावण का वध कर, धरती का उद्धार किया।
मानवता की गरिमा से भारत भू का श्रृंगार किया।
विप्र-धेनु-सुर-संतों में भर दिया अभयता का स्पन्दन।
राम! तुम्हारा शत अभिनंदन।।

न्याय धर्म का दया प्रेम का, तुमने संतान-वितान किया।
यम नियमों की गरिमा को, तुमने सदैव सम्मान दिया।
जगती के जन जन को तुमने, पुरुषोचित अभिमान दिया।
कर सर्वस्व निछावर अपना, काम सभी निष्काम किया।
नष्ट किया तुमने निर्भय हो, इस धरती का दारुण-क्रन्दन।
राम! तुम्हारा शत अभिनंदन।।

➲ **राधेश्याम आर्य**

कोरोना को हराना है, भारत को बचाना है
हाथ जोड़कर करो नमस्ते, घर में बैठो हंसते-हंसते
ईश्वर को ध्याना है, भारत को बचाना है।।

शुद्ध सामग्री जाविग्री से, यज्ञ करो तुम गायत्री से
वायु शुद्ध बनाना है, भारत को बचाना है।।

शाकाहार को तुम अपनाओ, मांसाहार को दूर भगाओ
सात्विक ही खाना है, भारत को बचाना है।।

हाथ-पैर को धोकर रहना, नाक-कान मत छूते रहना
शुद्धता को अपनाना है, भारत को बचाना है।।

➲ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

प्रणामाञ्जलि
शत्-शत् प्रणाम

ओ सद्गृहस्थ, ओ वानप्रस्थ, ओ तपः पूत ओ पूर्णकाम्।
यतिवर तुझको शत् शत् प्रणाम।

जीवन तेरा क्या सरल सरल, मानस तेरा क्या विमल विमल।
निश्चय में अडिग हिमालय सम्, शीतल पावन ज्यों गंगा जल।

ओ श्वेत वस्त्रधारी साधु, तेरा पथ क्या सुन्दर ललाम।
तेरे प्रयत्न सब सफल हुए, चहु दिश विद्या के स्रोत बहे।

तेरे आवाहन पर कितने वीरों ने जीवन दान दिये।
तू शांत महासागर समान, तूफानों का भी केंद्र धाम।

तू सत्य अहिन्सा में विलीन, सर्वथा पापमय से विहीन।
ऋषि भक्ति का सागर महान् तू उस सागर का मुक्त मीन।

तेरा चरित्र महिमा मंडित प्रेरणा स्रोत हृदयाभिराम्।
यतिवर तुझको शत् शत् प्रणाम।।

➲ **स्व. श्री उत्तम चन्द्र शरण**

ईश्वर की चिट्ठी...

सुरेंद्र कुमार रैली
अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

मेरे प्रियजनों, मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूं। मैंने तुम्हें इस संसार में एक सुंदर शरीर देकर भेजा। एक-एक अंग इतना व्यवस्थित किया हुआ हैं, जिस पर तुम्हें नाज है।

तुम्हारी आंखें, तुम्हारे कान, तुम्हारा चेहरा, तुम्हारा धड़कता दिल, तुम्हारी जुबान, तुम्हारे दो हाथ, हाथों में अंगुलियां, तुम्हारी टांगें, तुम्हारे पैर, तुम्हारी नसों में निरंतर भागता हुआ खून, तुम्हारा सिर, सिर में रखा हुआ हर तरह से सुरक्षित दिमाग और मन, तुम्हारी निजी सबसे भिन्न अलग शक्ल, अक्ल और पूरा शरीर! किस-किस की चर्चा करूं? इतना ही नहीं इस शरीर के पालन पोषण के लिए भरा पूरा ब्रह्माण्ड जिसमें तुम्हें जीने के लिए न केवल हवा, पानी, रोशनी, आकाश और पृथ्वी बल्कि जिसमें तरह-तरह के खाद्य पदार्थों को पैदा करने की शक्ति है, तुम्हें प्रदान की। मगर अफसोस! कि इतना कुछ पाने के बाद भी तुम्हारे पास मेरे लिए एक मिनट का समय भी नहीं हैं। मेरा बड़ा मन था कि मैं तुम्हारी कुछ सुनूं तुम्हें कुछ सुनाऊं... तुम्हारा कुछ मार्गदर्शन करूं? ताकि तुम्हें समझ आए कि तुम किसलिए इस संसार में आए हो और किन कार्यों में उलझ गए हो, लेकिन तुम्हें समय ही नहीं मिला और मैं मन मार के ही रह गया।

जरा अपनी दिनचर्या तो देखो- सुबह जैसे ही सो कर उठे, मैं तुम्हारे बिस्तर के पास ही खड़ा था। मुझे लगा कि तुम मुझसे कुछ बात करोगे। तुम कल या पिछले हफ्ते हुई किसी बात या घटना के लिए मुझे धन्यवाद कहोगे। लेकिन तुम फटाफट चाय पीकर शौचालय तैयार होने चले गये और मेरा ध्यान भी नहीं किया। फिर मैंने सोचा कि तुम स्नान करके मुझे याद करोगे। पर तुम इस उधेड़बुन में लग गये कि तुम्हें आज कौन से कपड़े पहनने हैं। फिर जब तुम जल्दी से नाश्ता कर रहे थे और अपने ऑफिस या दुकान के कागज इकट्ठे करने के लिए घर में इधर से उधर दौड़ रहे थे तो भी मुझे लगा कि अब तुम्हें मेरा ध्यान आयेगा।

फिर जब तुमने ऑफिस या दुकान जाने के लिए बस या ट्रेन पकड़ी या अपनी कार या मोटरबाइक निकाली तो मैं समझा कि इस खाली समय का उपयोग तुम मुझसे बातचीत करने में करोगे पर तुमने थोड़ी देर अखबार पढ़ा और फिर खेलने लग गए अपने मोबाइल से और मैं तुम्हारे पास खड़ा का खड़ा रह गया। मैं तुम्हें बताना चाहता था कि दिन का कुछ हिस्सा मेरे साथ बिता कर तो देखो, तुम्हारे काम और भी अच्छी तरह से होने लगेंगे। लेकिन तुमने मुझसे बात भी नहीं की। एक मौका ऐसा भी आया कि जब तुम बिल्कुल खाली थे और कुर्सी पर 15 मिनट यूं ही बैठे रहे लेकिन तब भी तुम्हें मेरा ध्यान नहीं आया। दोपहर के खाने के समय जब तुम इधर-उधर देख रहे थे, तो भी मुझे लगा कि खाना खाने से पहले तुम एक पल के लिए मेरे बारे में सोचोगे, लेकिन ऐसा भी नहीं हुआ। ■■

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 27 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734
उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा

निर्भया कांड के दोषी

निर्भया के हत्यारे चारों बलात्कारियों के बचाव के लिए उठाए गए कदम ने चौंकाया है और गंभीर सवाल को जन्म दिया है। अत: सरकार इस तथ्य की जांच CBI, IB या NIA से करवाए कि निर्भया के हत्यारे चारों बलात्कारियों के संरक्षक कौन लोग हैं, उनका एजेंडा क्या है? ज्ञात रहे कि पूरा देश इस तथ्य से भलीभांति परिचित है कि निर्भया के हत्यारे चारों बलात्कारी एक निजी बस के ड्राइवर, कंडक्टर, खलासी, क्लीनर का काम करते थे। अत: उनकी अर्थिक पृष्ठभूमि/स्थिति का आंकलन आसानी से किया जा सकता है।

पूरा देश इस कटु सत्य से भी भलीभांति परिचित हैं कि भारतीय अदालतों में मुकदमेबाजी कितनी महंगी है, विशेषकर जब यह मुक़दमेबाजी हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचती है तो खर्च की सारी सीमाएं तोड़ देती है। यही कारण है कि पिछले कुछ महीनों से निर्भया के हत्यारे चारों बलात्कारियों के बचाव के लिए की जा रहीं अभूतपूर्व कोशिशों के कारण एक गंभीर सवाल पिछले कई महीनों से मेरे मन को मथ रहा था। लेकिन उन घृणित हत्यारों के बचाव के लिए उठाए गए कदम ने तो मुझे बुरी तरह चौंकाया है।

प्रत्येक भारतवासी तब स्तब्ध हो गया जब यह समाचार देश ने पढ़ा कि निर्भया के हत्यारे चारों बलात्कारियों की फांसी की सजा के खिलाफ इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ) में अपील की गई है तथा संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार आयोग में भी अपील की गई है। उल्लेखनीय है कि इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ) में मुकदमेबाजी का खर्च करोड़ों में होता है, इसे आप इस तथ्य से समझ सकते हैं कि कुछ समय पूर्व कुलभूषण जाधव की फांसी की सजा के खिलाफ भारत ने इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ) में जब अपील की थी तो देशहित में हरीश साल्वे ने जाधव की फांसी रुकवाने का मुकदमा लड़ने के लिए केवल एक रुपये फीस ली थी किंतु ICJ में पाकिस्तान की तरफ केस लड़ने के लिए जो वकील खड़ा हुआ था उसने 6 करोड़ रुपये फीस ली थी। इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ) में वकीलों की फीस सामान्यत: करोड़ों में ही होती है।

हालांकि यह शत प्रतिशत तय है कि चारों हत्यारों की अपील इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ) में सुनी ही नहीं जाएगी लेकिन प्रश्न यह है कि वो कौन सी ताकतें हैं जो इन चारों हत्यारों को बचाने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करने के लिए तैयार हैं? ऐसा करने के पीछे उनका उद्देश्य क्या है? ध्यान रहे कि इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ), में अपील करने से पहले भी चारों हत्यारों के बचाव के लिए अब तक निचली अदालतों से लेकर देश की सर्वोच्च अदालत तक जिस तत्परता के साथ जितनी त्वरित और आक्रामक शैली में भीषण कानूनी लड़ाई लड़ी गई है, उस लड़ाई को लड़ने में जितना पैसा पानी की तरह बहाया गया होगा, उतना पैसा बहाना किसी निजी बस के ड्राइवर, कंडक्टर, खलासी, क्लीनर या उनके परिजनों के लिए असंभव है। चारों हत्यारों के वकील द्वारा दी गई यह दलील अत्यंत हास्यास्पद और थोथी है कि हत्यारों के बचाव के लिए विदेशों

में रह रहे कुछ भारतीय नागरिकों ने इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ) में अपील की है। क्या यह सम्भव है कि एक निजी बस में ड्राइवर, कंडक्टर, खलासी, क्लीनर का काम करने वाले घृणित अपराधियों के विदेशों में रह रहे करोड़पति भारतीयों से इतने सघन और प्रगाढ़ संबंध हों कि वो भारतीय इन हत्यारों के लिए करोड़ों रुपये फूंकने के लिए बेचैन हुए जा रहे हैं?

उपरोक्त पूरे घटनाक्रम से यह तो निश्चित है कि कुछ बहुत बड़ी और अदृश्य शक्तियां इन हत्यारों के बचाव के लिए जमीन आसमान एक किए हैं। लेकिन इसके पीछे उन शक्तियों का उद्देश्य क्या है? यह सवाल अत्यंत रहस्यमय और गंभीर भी है। अत: देशहित में यह आवश्यक है कि सरकार इस तथ्य की जांच CBI, IB या NIA से करवाए कि निर्भया के हत्यारे चारों बलात्कारियों के संरक्षक कौन लोग हैं, उनका एजेंडा क्या है? मुझे आश्चर्य होता है कि इतने गंभीर तथ्य पर देश की मीडिया ने भी आज तक ना तो ध्यान दिया, ना ही कोई सवाल पूछा। **अंतत: चारों हत्यारों को फांसी दे दी गयी।**

■■ **ओंकार स्वरूप शर्मा, दिल्ली**

समाचार - सूचनाएं

- 23 फरवरी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार को बचाने के लिए 'गुरुकुल बचाओ हुंकार रैली' का ऐतिहासिक आयोजन हुआ। आर्य समाज के वरिष्ठ संन्यासियों, नेताओं, गुरुकुलों के आचार्यों एवं देशभर के अनेक आर्यजनों द्वारा शांति मार्च प्रदर्शन किया गया।
- आर्य समाज रायबरेली का 125वां वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक धूमधाम से सम्पन्न हुआ।
- महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न। महर्षि दयानन्द जन्मभूमि को विश्व दर्शनीय बनाने का संकल्प श्री विजय रूपाणी मुख्यमंत्री गुजरात द्वारा लिया गया। राज्यपाल मान्यवर डॉ. देवव्रत आचार्य, महाशय धर्मपाल व अन्य गणमान्य आर्यों की उपस्थिति से कार्यक्रम सफल रहा।
- 23 मार्च को शहीद दिवस के अवसर पर भजन संध्या का आयोजन केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आर्य समाज रमेश नगर दिल्ली में होना था जो कि कोरोना की वजह से स्थगित कर अमर बलिदानियों को याद किया गया।

विनम्र श्रद्धांजलि

दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, भारत की महान विभूति, स्वतंत्रता सेनानी, विभिन्न भाषाओं के लेखक, समाज सुधारक पं. सुधाकर चतुर्वेदी जी का 27 फरवरी 2020 को बैंगलोर में निधन हो गया। श्री सुधाकर जी का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं और परम्पराओं के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित रहा। आपका सौम्य स्वभाव, मधुर भाषा और परोपकारी व्यवहार मानव जाति के लिए अनुपम प्रेरणा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई के मंत्री श्री अरुण अबरोल जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा अबरोल जी का 1 मार्च 2020 को आकस्मिक निधन से हो गया। श्रीमती सुधा अबरोल जी का सौम्य स्वभाव, मधुर वाणी और वेद तथा ऋषि स्वामी दयानन्द जी के प्रति निष्ठा अनुकरणीय एवं नारी जगत के लिए प्रेरणाप्रद है। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 4 मार्च को आर्य समाज शांताक्रुज मुंबई में सम्पन्न हुई। ऐसे आर्यसमाजी के निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

- प्रबंध सम्पादक

लेखकों से अपील : अपनी रचना, लेख, कविता आदि भेजते समय ध्यान रखें कि लिखावट साफ-सुथरी हो व लेख कागज के एक ओर हाशिया छोड़ते हुए लिखें। लेख के हर पृष्ठ पर नम्बर व हस्ताक्षर करें, साथ ही 5 रुपये की डाक टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूले अन्यथा लेख, रचना लौटा पाना संभव नहीं हो पाएगा। अपना पूरा नाम, फोन, पता अवश्य लिखें। सभी लेख, रचना प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' आर्य समाज भवन, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के पते पर भेंजे।

पाठकों से अपील : आर्य समाज नोएडा की यह पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' आपको कैसी लगी, इसके बारे में अपने विचार प्रबंध संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के पते पर भेंजे। आपकी प्रतिक्रिया से ही हमें सम्बल मिलेगा तथा हम पत्रिका को और उपयोगी बनाने का प्रयास करेंगे। हमें आपके पत्रों का बेसब्री से इन्तजार रहेगा।

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2020 को समाप्त हो गया है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ **प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734**

होली का वास्तविक स्वरूप

होली पर्व पर अपनी आदत के अनुसार नवबुद्ध अम्बेडकरवादी सोशल मीडिया में चिल्ला रहे है कि होलिका दहन नारी अधिकारों का दमन है। मैं ऐसे त्योहार की बधाई किसी को क्यों दूं। होलिका का दोष क्या था? होलिका को किसने जलाया? क्या होलिका को जलाते समय उसके परिजन वहां मौजूद थे? होलिका भली थी या बुरी यह तो मैं नहीं जानता। पर पढ़ लिखकर इतना जरूर समझा कि होली किसी स्त्री को जिन्दा जलाकर जश्न मनाने की सांकेतिक पुनरावृत्ति है। ऐसा करना ब्राह्मणवादी और मनुवादी सोच है।

होली का वास्तविक स्वरूप : इस पर्व का प्राचीनतम नाम वासन्ती नव सस्येष्टि है अर्थात् बसन्त ऋतु के नये अनाजों से किया हुआ यज्ञ, परन्तु होली होलक का अपभ्रंश है। यथा- तृणाग्निं भ्रष्टार्थ पक्वशमी धान्य होलकः (शब्द कल्पद्रुम कोष) अर्धपक्वशमी धान्यैस्तृण भ्रष्टैश्च होलकः होलकोऽल्पानिलो मेदः कफ दोष श्रमापह। अर्थात तिनके की अग्नि में भुने हुए (अधपके) शमी-धान्य (फली वाले अन्न) को होलक कहते हैं। यह होलक वात-पित्त-कफ तथा श्रम के दोषों का शमन करता है।

होलिका किसी भी अनाज के ऊपरी पर्त को होलिका कहते हैं-जैसे- चने का पट पर (पर्त) मटर का पट पर (पर्त), गेहूं, जौ का गिद्दी से ऊपर वाला पर्त। इसी प्रकार चना, मटर, गेहूं, जौ की गिदी को प्रह्लाद कहते हैं। होलिका को माता इसलिए कहते है कि वह चनादि का निर्माण करती (माता निर्माता भवति) यदि यह पर्त पर (होलिका) न हो तो चना, मटर रुपी प्रह्लाद का जन्म नहीं हो सकता। जब चना, मटर, गेहूं व जौ भुनते हैं तो वह पट पर या गेहूं, जौ की ऊपरी खोल पहले जलता है, इस प्रकार प्रह्लाद बच जाता है। उस समय प्रसन्नता से जय घोष करते हैं कि होलिका माता की जय अर्थात् होलिका रूपी पट पर (पर्त) ने अपने को देकर प्रह्लाद (चना-मटर) को बचा लिया।

अधजले अन्न को होलक कहते हैं। इसी कारण इस पर्व का नाम होलिकोत्सव है और बसन्त ऋतुओं में नये अन्न से यज्ञ (येष्ट) करते हैं। इसलिए इस पर्व का नाम वासंती नव सस्येष्टि है। यथा- वासन्तो=वसन्त ऋतु। नव=नये। येष्टि=यज्ञ। इसका दूसरा नाम नव सम्वतसर है। मानव सृष्टि के आदि से आर्यों की यह परम्परा रही है कि वह नवान्न को सर्वप्रथम अग्निदेव पितरों को समर्पित करते थे। तत्पश्चात् स्वयं भोग करते थे। हमारा कृषि वर्ग दो भागों में बंटा है? 1. वैशाखी, 2. कार्तिकी। इसी को क्रमश : वासंती और शारदीय एवं रबी और खरीफ की फसल कहते हैं। फाल्गुन पूर्णमासी वासन्ती फसल का आरम्भ है। अब तक चना, मटर, अरहर व जौ आदि अनेक नवान्न पक चुके होते हैं। अतः परम्परानुसार पितरों देवों को समर्पित करें, कैसे सम्भव है। तो कहा गया है- अग्निवै देवानाम मुखं अर्थात् अग्नि देवों-पितरों का मुख है जो अन्नादि शाकल्यादि आग में डाला जायेगा। वह सूक्ष्म होकर पितरों देवों को प्राप्त होगा।

हमारे यहां आर्यों में चातुर्य्यमास यज्ञ की परम्परा है। वेदज्ञों ने चातुर्य्यमास यज्ञ को वर्ष में तीन समय निश्चित किये हैं? 1. आषाढ़ मास, 2. कार्तिक मास (दीपावली) 3. फाल्गुन मास (होली) यथा फाल्गुन्या पौर्णमास्यां चातुर्मास्यानि प्रयुञ्जीत मुखं वा एतत सम्वत् सरस्य यत् फाल्गुनी पौर्णमासी आषाढ़ी पौर्णमासी अर्थात् फाल्गुनी पौर्णमासी, आषाढ़ी पौर्णमासी और कार्तिकी पौर्णमासी को जो यज्ञ किये जाते हैं वे चातुर्यमास कहे जाते हैं आग्रहाण या नव संस्येष्टि।

समीक्षा-आप प्रतिवर्ष होली जलाते हो। उसमें आखत डालते हो जो आखत हैं-वे अक्षत का अपभ्रंश रूप हैं, अक्षत चावलों को कहते हैं और अवधि भाषा में आखत को आहुति कहते हैं। कुछ भी हो चाहे आहुति हो, चाहे चावल हो, यह सब यज्ञ की प्रक्रिया है। आप जो परिक्रमा देते हैं यह भी यज्ञ की प्रक्रिया है। क्योंकि आहुति या परिक्रमा सब यज्ञ की प्रक्रिया है, सब यज्ञ में ही होती है। आपकी इस प्रक्रिया से सिद्ध हुआ कि यहां पर प्रतिवर्ष सामूहिक यज्ञ की परम्परा रही होगी इस प्रकार चारों वर्ण परस्पर मिलकर इस होली रूपी विशाल यज्ञ को सम्पन्न करते थे। आप जो गुलरियां बनाकर अपने-अपने घरों में होली से अग्नि लेकर उन्हें जलाते हो। यह प्रक्रिया छोटे-छोटे हवनों की है। सामूहिक बड़े यज्ञ से अग्नि ले जाकर अपने-अपने घरों में हवन करते थे। बाहरी वायु शुद्धि के लिए विशाल सामूहिक यज्ञ होते थे और घर की वायु शुद्धि के लिए छोटे-छोटे हवन करते थे दूसरा कारण यह भी था।

ऋतु सन्धिषु रोगा जायन्ते? अर्थात् ऋतुओं के मिलने पर रोग उत्पन्न होते हैं, उनके निवारण के लिए यह यज्ञ किये जाते थे। यह होली हेमन्त और बसन्त ऋतु का योग है। रोग निवारण के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम साधन है। अब होली प्राचीनतम वैदिक परम्परा के आधार पर समझ गये होंगे कि होली नवान्न वर्ष का प्रतीक है। ○○

गर्दन और पीठ दर्द से जुड़ी बीमारियों की वजह

गलत तकिए का चुनाव

अक्सर देखा गया है कि फिजियो-थैरेपी से जुड़े 15 फीसद मामले गर्दन में दर्द की शिकायत के होते हैं। सर्वाइकल पेन का भी एक बड़ा कारण गलत तकिए का चुनाव हो सकता है।

गर्दन और पीठ के दर्द से जुड़ी कई बीमारियों की वजह गलत तकियों का चुनाव हो सकता है। अगर आपको भी अक्सर गर्दन और पीठ का दर्द परेशान करता है और आप इलाज कराकर थक गए और दर्द में कमी नहीं आ रही है तो इसका कारण आपका तकिया भी हो सकता है। अक्सर देखा गया है कि फिजियोथैरेपी से जुड़े 15 फीसदी मामले गर्दन में दर्द की शिकायत के होते हैं। सर्वाइकल पेन का एक बड़ा कारण गलत तकिए का चुनाव हो सकता है। हवाईजहाज में सफर के दौरान जो लोग ट्रेवल पिलो का इस्तेमाल नही करते हैं, ऐसा देखा गया है कि उन्हें गर्दन में अकड़न और दर्द की शिकायत होती है। इस तरह की समस्याओं का कारण यह है कि ज्यादातर लोगों को इसकी जानकारी नहीं होती कि किस प्रकार और आकार का तकिया प्रयोग किया जाए।

सोने के पॉश्चर के अनुसार चुनें तकिया : ऊपर की ओर मुंह करके सोने वाले लोगों के लिए- इस तरह सोने वाले लोगों को कम ऊंचाई वाले तकिए का इस्तेमाल करना चाहिए। सीधे सोने वालों लोगों के लिए फाइबर का तकिया अच्छा माना जाता है। यह तकिया सही ऊंचाई, मुलायम होता है और यह ज्यादा महंगा भी नहीं होता है।

सर्वाइकल संबंधी समस्या : सोते समय गर्दन सही ढंग से न होने के कारण उसमें सूजन और रीढ़ की हड्डी में गांठें होने की संभावना हो सकती है।

सिरदर्द या चक्कर आना : गलत ऊंचाई का तकिया आपकी गर्दन में कमजोरी ला सकता है। ऊपरी सर्वाइकल स्पाइन के कारण सोकर उठते समय सिर दर्द, चक्कर आना या मिचली जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

कंधे का दर्द होना : यदि आप एक ही करवट में सोते हैं या आपका तकिया सही सपोर्ट नहीं देता है तो इससे कंधे के निचले हिस्से पर सारा भार आ जाता है। जिससे कंधे में दर्द की समस्या हो सकती है।

करवट लेकर सोने वाले लोगों के लिए : जो लोग करवट लेकर सोते हैं, उन्हें ज्यादा पतला तकिया उपयोग करना चाहिए। जो गर्दन और सिर के बीच के हिस्से को सपोर्ट कर सके।

कमर के निचले व बीच के हिस्से में दर्द होना : रीढ़ की हड्डी एक चेन की तरह है और लंबे समय तक सोने की वजह से इसके ऊपरी हिस्से में खिंचाव आ जाता है। जिससे कमर के निचले हिस्से में दर्द की शिकायत हो सकती है।

पेट के बल सोने वाले लोगों के लिए : कुछ लोग पेट के बल सोते हैं, मगर इस तरह से सोना सेहत के लिए सबसे ज्यादा हानिकारक होता है। इसलिए अपनी इस आदत को जल्दी से जल्दी बदल लेना चाहिए। अपने सिर के नीचे के अलावा हाथ के बाजू में रूई का तकिया रखकर सोएं। इससे यह फायदा होगा कि आपको याद रहेगा कि आपको पेट के बल नहीं सोना है। यह तकिए मुलायम होने के साथ-साथ आसानी से मुड भी जाते हैं। जो लोग पेट के बल सोने के आदी होते हैं उनके लिए खासकर रूई के तकिए अच्छे होते हैं।

ऐसे करें तकिए का चुनाव

सामान्य तकिया

यह तकिया उन लोगों के लिए बेहतर होता है जिन्हें किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं है, ऐसे लोगों को सामान्य तकिया इस्तेमाल करना चाहिए।

सर्वाइकल तकिया

सर्वाइकल के मरीज लिए मैमोरी फोम तकिया तकिया अच्छा माना जाता है। अन्य तकियों के मुकाबले यह थोड़ा महंगा होता है, लेकिन जो लोग नीद में पूरे मुड़ जाते हैं, उनके लिए यह सही नहीं है। ज्यादा गर्मी और नमी के समय में इस तकिए का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह तकिया उन लोगों के लिए बेहतर होता है जिन्हें रीढ़ की हड्डी की समस्या है। इस तकिए की खास बात यह होती है कि यह रीढ़ की हड्डी को सही रखता है। इसके नियमित प्रयोग से दर्द में आराम मिलता है और इससे दर्द भी कम होता है।